उज्जैन
रविवार
12
जुलाई, 2026 | मूल्य- 2 रु. | वर्ष-12 | अंक-249
मालवा डिवीजन 402/2024-2026
आर एन आई क्रमांक 2013/57651

दैनिक ब्रह्मास्त्र

3 धरने पर बैठे छात्रों को कॉकरोच जनता पार्टी का समर्थन

7 भारत पहली बार सीरीज में 4 मैच हारा बटलर और बूक की रिकॉर्ड साझेदारी

उज्जैन आर्थो
सबसे सस्ता और सबसे अच्छा हड्डी का हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल
डॉ. हेमंत एच. जीनवाल
फ्रैक्चर, जोड़ एवं रीड़ की हड्डी रोग विशेषज्ञ
भरतपुरी पुराने आर.टी.ओ. के सामने, देवास रोड, उज्जैन 9669698112

अमेरिका ने ईरान के 5 शहरों पर एयरस्ट्राइक की

होर्मुज में जहाज पर अटैक के बाद कार्रवाई, ईरान ने कुवैत, बहरीन को निशाना बनाया

ब्रह्मास्त्र ▸▸ तेल अवीव

सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई का बयान- कहा कि अपने पिता और युद्ध में मारे गए लोगों के खून का बदला लिया जाएगा

अमेरिका ने शनिवार देर रात ईरान पर एयरस्ट्राइक की। अमेरिकी सेंट्रल कमांड के मुताबिक, न्यूक्लियर सिटी बुशहर समेत असालुयेह, बंदर-ए-देयर, जास्क और चाबहार के करीब 140 सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। ईरानी मीडिया ने इन इलाकों में धमाकों की पुष्टि की है।

अमेरिका के मुताबिक यह कार्रवाई होर्मुज स्ट्रेट में साइप्रस के झंडे वाले कंटेनर जहाज पर हुए हमले के जवाब में की गई। केंट कॉम के मुताबिक, हमले में जहाज में आग लग गई, इंजन को भारी नुकसान पहुंचा और चालक दल का एक सदस्य लापता है। हमलों के बाद ईरान ने भी सख्त चेतावनी दी है। विदेश मंत्रालय के सलाहकार अली सफारी ने कहा कि अमेरिका को इस कार्रवाई का जवाब दिया जाएगा। साथ ही ईरान ने साफ किया कि जब तक अमेरिकी दखल जारी रहेगा, तब तक होर्मुज स्ट्रेट बंद रहेगा।

- **ईरान के नए सुप्रीम लीडर बोले-** पिता की मौत का बदला लेंगे: अली खामेनेई के निधन के बाद पहली बार नए सुप्रीम लीडर मुजतबा खामेनेई का बयान सामने आया। उन्होंने कहा कि अपने पिता और युद्ध में मारे गए लोगों के खून का बदला लिया जाएगा।
- **सीएनएन का दावा- ईरान ने परमाणु ठिकानों को दोबारा बनाना शुरू किया:** सीएनएन ने सैटेलाइट तस्वीरों के आधार पर दावा किया कि ईरान पारचिन समेत कुछ न्यूक्लियर साइट्स की मरम्मत और दोबारा निर्माण कर रहा है। रिपोर्ट में इसे अमेरिका-ईरान टकराव का संभावित उल्लंघन बताया गया।
- **ईरानी विदेश मंत्री बोले-** अमेरिका समझौता तोड़ रहा: विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि अमेरिका खुद एमओयू का उल्लंघन कर रहा है। उन्होंने कहा कि समझौता तभी चलेगा, जब दोनों पक्ष उसका पालन करें।
- **ट्रम्प की ईरान को सबसे बड़े हमले की चेतावनी:** डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि अगर ईरान ने उनकी हत्या की कोशिश की, तो अमेरिका हजारों मिसाइलों से जवाब देगा। उन्होंने दावा किया कि जवाबी कार्रवाई के आदेश पहले ही दिए जा चुके हैं।

नीता अंबानी देश की सबसे पावरफुल महिला

फॉर्च्यून इंडिया की लिस्ट में नंबर 1 पर, टॉप-10 में ईशा अंबानी भी शामिल

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

रिलायंस फाउंडेशन की चेयरपर्सन नीता अंबानी फॉर्च्यून इंडिया की सबसे पावरफुल टॉप-100 महिलाओं की लिस्ट में पहला स्थान हासिल किया हैं। यह सम्मान उन्हें लीडरशिप और समाज सेवा के लिए मिला है।

उनकी लीडरशिप में फाउंडेशन ने शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में काम करते हुए 2.9 करोड़ बच्चों समेत देश के 10 करोड़ से ज्यादा लोगों की जिंदगी बदली है। इवेंट में नीता अंबानी ने कहा, 'लीडरशिप को करुणा, समावेश और सशक्तिकरण से परिभाषित किया जाना चाहिए। मेरे लिए सच्ची पावर दूसरों को सशक्त बनाना है। भारत को दया, सहानुभूति और सभी जीवों के प्रति सम्मान पर आधारित 'सॉफ्ट पावर' की ज्यादा जरूरत है।' नीता अंबानी ने इस बात पर भी जोर दिया कि लड़कियों को सशक्त बनाने से अंततः देश मजबूत होगा।

अमेरिका में मिला 'एएपीआई ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड'

फॉर्च्यून इंडिया की इस रैंकिंग से पहले, इसी महीने 3 जुलाई को नीता अंबानी को अमेरिका के फ्लोरिडा के ताम्पा शहर में 'एएपीआई ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड' से सम्मानित किया गया था। अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ फिजिशियंस ऑफ इंडियन ओरिजिन ने यह पुरस्कार उन्हें स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, खेल, संस्कृति और सामुदायिक विकास के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए दिया था।

ईशा अंबानी भारत की सातवीं सबसे पावरफुल वुमन- फॉर्च्यून इंडिया की लिस्ट में नीता अंबानी के बाद रोशनी नाडार मल्होत्रा दूसरे नंबर पर रहीं, जबकि रेड्डी सिस्टर्स- शोभना कामिनेनी, संगीता रेड्डी, प्रीथा रेड्डी और सुनीता रेड्डी संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर रहीं। टॉप 15 की लिस्ट में सावित्री जिंदल, प्रीति अडानी, किरण मजूमदार-शॉ, ईशा अंबानी, प्रिया नायर, बेला बजरिया और लीना नायर शामिल रहीं। खास बात ये है कि इस लिस्ट में उनकी बेटी ईशा अंबानी 7वें नंबर पर रहीं।

राजस्थान समेत 9 राज्यों में बारिश घटी

श्रीगंगानगर का पारा 42 डिग्री, प्रयागराज-ऋषिकेश में गंगा का लेवल बढ़ा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

देश के लगभग 70% हिस्से से मानसून के बादल गायब हो गए हैं। राजस्थान, दिल्ली-एनसीआर, पश्चिमी मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र में अगले 5 दिन तक बारिश की संभावना भी कम है। बारिश रुकने से मध्य प्रदेश, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश समेत उत्तर भारत के राज्यों में तापमान बढ़ गया। राजस्थान के श्रीगंगानगर में तापमान 42 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हालांकि कुछ हिस्सों में शनिवार को भारी बारिश हुई। उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश सबसे ज्यादा प्रभावित हुए। दोनों राज्यों में लैंडस्लाइड की वजह से कुल 440 सड़कें बंद हो गईं। मौसम विभाग के मुताबिक पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और मेघालय में बहुत ज्यादा बारिश हुई। पहाड़ों पर हो रही बारिश से मैदानी इलाकों में गंगा का जलस्तर बढ़ने लगा है। प्रयागराज-ऋषिकेश से तस्वीरें भी सामने आई हैं। उत्तराखंड के ऋषिकेश में पहाड़ी इलाकों में लगातार बारिश के बाद गंगा नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ गया है। गंगा का पानी डेंजर मार्क से सिर्फ 1.10 मीटर नीचे बह रहा है, जिससे परमार्थ निकेतन का गंगा आरती स्थल डूब गया है।

बिना डेटा वाले मोबाइल रिचार्ज प्लान हो सकते हैं सस्ते

ट्राई ने ड्राफ्ट पेश किया, सुझाव मांगे

70% तक घट सकती हैं कीमतें

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

बिना डेटा वाले मोबाइल रीचार्ज प्लान सस्ते हो सकते हैं। दूरसंचार नियामक प्राधिकरण इस पर काम कर रहा है। ट्राई ने दूरसंचार उपभोक्ता संरक्षण विनियम, 2026 का नया मसौदा जारी किया है। इसका मुख्य उद्देश्य है- डेटा नहीं चाहिए, तो उसका पैसा क्यों दें? ट्राई ने इस पर सभी पक्षों से सुझाव मांगे हैं, फिर इसे अंतिम रूप दिया जाएगा।

क्या है नया प्रस्ताव?

अभी कंपनियां सीमित समय के लिए ही केवल कॉल-एसएमएस पैक देती हैं। इससे कई ग्राहकों को मजबूरी में डेटा वाला महंगा प्लान लेना पड़ता है। अब ट्राई ने प्रस्ताव दिया है कि कंपनियां जितने दिनों की वैधता जैसे 7, 28, 56 या 84 दिन का डेटा वाला प्लान लाती हैं, उतनी ही अवधि का केवल कॉल व एसएमएस वाला प्लान भी लाना होगा।

कीमतें कितनी कम होंगी?

- चूंकि मोबाइल प्लान्स में 50-70% खर्च डेटा का होता है, इसलिए नया नियम लागू होने पर सिर्फ कॉल-रटर वाले प्लान की कीमत आधी से भी कम हो सकती है। उदाहरण के लिए, 300 रुपए का प्लान 100 से 150 रुपए में मिल सकता है।
- फीचर फोन यूजर्स व बुजुर्गों को, जो डेटा इस्तेमाल नहीं करते। जो दूसरी सिम सिर्फ कॉल के लिए रखते हैं। इसके अलावा जिनके घरों में वाईफाई है। उनके लिए भी ये फायदेमंद रहेगा।

नेपाल में फिर जेन-जी प्रदर्शन

3 दिन में 3 आत्मदाह, पीएम बालेन शाह का इस्तीफा मांगा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ काठमांडू

नेपाल में युवाओं की बढ़ती नाराजगी फिर से सड़कों पर दिखाई देने लगी है। पिछले तीन दिनों में तीन युवाओं ने अपने ऊपर पेट्रोल छिड़ककर आत्मदाह का प्रयास किया। इनमें से दो की इलाज के दौरान मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से झुलसा हुआ अस्पताल में भर्ती है।

प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह बालेन के इस्तीफे की मांग तेज हो गई है। राजधानी काठमांडू में युवा प्रदर्शन कर रहे हैं, वहीं विपक्षी दल नेपाली कांग्रेस ने सरकार पर युवाओं में उम्मीद और भरोसा जगाने में विफल रहने का आरोप लगाया है। जेन-जी नेपाल संगठन ने प्रधानमंत्री बालेन शाह पर जनविरोधी और निरंकुश तरीके से शासन चलाने का आरोप लगाया है। संगठन का कहना है कि बजट व नीतियों में युवाओं के रोजगार और आय बढ़ाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए।

2023 में बालेन शाह ने आत्मदाह को सरकार की विफलता कहा था

- 2023 की वह घटना भी चर्चा में है, जब प्रेम आचार्य ने आत्मदाह किया था। उस समय काठमांडू के मेयर रहे बालेन शाह ने इसे राज्य की चरम विफलता बताया था। अब मौजूदा घटनाओं पर उनकी चुप्पी विपक्ष और प्रदर्शनकारियों के निशाने पर है।
- नेपाल में लगातार सामने आ रही इन घटनाओं ने युवाओं की मानसिक स्थिति, बेरोजगारी और सरकारी नीतियों को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों का मानना है कि यदि सरकार ने जल्द प्रभावी कदम नहीं उठाए तो विरोध और तेज हो सकता है।

दतिया विधानसभा उपचुनाव को लेकर मध्य प्रदेश की राजनीति में नया घटनाक्रम आया सामने

नरोत्तम मिश्रा को शिवसेना उद्धव गुट का चुनाव लड़ने का ऑफर

ब्रह्मास्त्र ▸▸ भोपाल

दतिया विधानसभा उपचुनाव को लेकर मध्य प्रदेश की राजनीति में नया घटनाक्रम सामने आया है। भारतीय जनता पार्टी द्वारा पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा को टिकट नहीं दिए जाने के बाद शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) ने उन्हें अपनी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ने का प्रस्ताव दिया है। हालांकि डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने स्पष्ट कर दिया है कि भारतीय जनता पार्टी का निर्णय उनके लिए सर्वोपरि है और वे पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के समर्थन में चुनाव प्रचार करेंगे।

शिवसेना (यूबीटी) के मध्य प्रदेश प्रदेशाध्यक्ष सुनील शर्मा ने बताया कि पार्टी नेतृत्व से चर्चा के बाद डॉ. नरोत्तम मिश्रा को दतिया विधानसभा उपचुनाव लड़ने का औपचारिक प्रस्ताव दिया गया है। उन्होंने कहा कि यदि डॉ. मिश्रा इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं तो शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे, युवा नेता आदित्य ठाकरे और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता दतिया पहुंचकर उनके पक्ष में चुनाव प्रचार करेंगे। इस संबंध में पार्टी की ओर से एक वीडियो संदेश भी जारी किया गया है।

राजनीतिक गतिविधियां और तेज होने के आसार

यह प्रस्ताव ऐसे समय आया है जब भाजपा ने दतिया विधानसभा उपचुनाव के लिए अशुतोष तिवारी को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। टिकट की घोषणा के बाद दतिया में डॉ. नरोत्तम मिश्रा के समर्थकों ने विरोध प्रदर्शन किया। बाद में उन्होंने फिर दोहराया कि भाजपा का निर्णय सर्वोपरि है और वे पार्टी के अधिकृत प्रत्याशी के लिए पूरी निष्ठा के साथ चुनाव प्रचार करेंगे। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि मध्य प्रदेश में सीमित संगठनात्मक आधार रखने वाली शिवसेना (यूबीटी) का यह प्रस्ताव राजनीतिक संदेश देने की कोशिश है। वहीं, डॉ. नरोत्तम मिश्रा द्वारा भाजपा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराने के बाद फिलहाल उनके किसी अन्य दल से चुनाव लड़ने की संभावना बेहद कम मानी जा रही है। अब दतिया उपचुनाव में राजनीतिक गतिविधियां और तेज होने के आसार हैं।

15 जुलाई तक टेंपल बॉन्ड जारी करने की प्रक्रिया पूरी करने का लक्ष्य निर्धारित

सिंहस्थ के लिए उज्जैन को बड़ी सौगात, टेंपल बॉन्ड से होगा मंदिरों का विकास

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

सिंहस्थ-2028 की तैयारियों को गति देने और उज्जैन को देश-दुनिया के प्रमुख धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में मध्यप्रदेश सरकार ने एक ऐतिहासिक पहल की है। प्रदेश सरकार देश में पहली बार टेंपल बॉन्ड जारी कर उज्जैन एवं आगर-मालवा के 11 प्रमुख मंदिरों के विकास और आधुनिकीकरण के लिए करीब 1100 करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना लागू करेगी। इस अभिनव वित्तीय मॉडल के तहत निवेशकों को मिलने वाला प्रतिफल और मूल राशि का भुगतान मंदिरों को प्राप्त होने वाले दान एवं अन्य आय से किया जाएगा। सरकार ने 15 जुलाई तक टेंपल बॉन्ड जारी करने की प्रक्रिया पूरी करने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

नगरीय विकास एवं आवास विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय दुबे की अध्यक्षता में आयोजित राज्य स्तरीय तकनीकी समिति की पहली बैठक में इस परियोजना को सैद्धांतिक मंजूरी प्रदान की गई। बैठक में वित्त, ऊर्जा, नगर एवं ग्राम निवेश तथा जल संसाधन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया। समिति ने परियोजना के वित्तीय ढांचे, निवेश मॉडल और विकास कार्यों के प्रारूप पर विस्तार से चर्चा की।

प्रदेश सरकार के अनुसार, इस परियोजना के लिए तीन अलग-अलग माध्यमों से धन की व्यवस्था की जाएगी। पहले चरण में 10 वर्ष की अवधि वाले टेंपल बॉन्ड के माध्यम से 200 करोड़ रुपये जुटाए जाएंगे। इसके अतिरिक्त केंद्र सरकार की अर्बन चैलेंज फंड योजना से 275 करोड़ रुपये प्राप्त होंगे, जबकि शेष 625 करोड़ रुपये बैंकों से ऋण के रूप में लिए जाएंगे। इस प्रकार कुल 1100 करोड़ रुपये की राशि से मंदिर परिसरों का समग्र विकास, आधारभूत सुविधाओं का विस्तार और श्रद्धालुओं के लिए आधुनिक सुविधाएं विकसित की जाएंगी। सरकार का दावा है कि यह देश का पहला ऐसा वित्तीय मॉडल होगा, जिसमें मंदिरों के विकास के लिए आम निवेशकों की भागीदारी सुनिश्चित होगी। बॉन्ड पर मिलने वाला प्रतिफल और मूलधन मंदिरों की दान राशि, धार्मिक गतिविधियों तथा अन्य आय के स्रोतों से चुकाया जाएगा। यदि यह मॉडल सफल रहता है तो भविष्य में देश के अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों पर भी इसे लागू किया जा सकता है।

उज्जैन के इन प्रमुख धार्मिक स्थलों का होगा कायाकल्प

परियोजना के तहत सिंहस्थ-2028 को ध्यान में रखते हुए उज्जैन के प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का व्यापक विकास किया जाएगा। इनमें काल भैरव मंदिर, मंगलनाथ मंदिर, सांदीपनि आश्रम, नवग्रह मंदिर, 84 महादेव मंदिर, अंगारेश्वर महादेव मंदिर, भूखी माता मंदिर, गढ़कालिका मंदिर और सिद्धवट शामिल हैं। इसके अलावा आगर-मालवा जिले के नलखेड़ा स्थित विश्वप्रसिद्ध मां बगलामुखी मंदिर का भी समग्र विकास किया जाएगा। इन मंदिरों में श्रद्धालुओं की सुविधाओं का विस्तार, सौंदर्यीकरण, यातायात व्यवस्था, पार्किंग, पेयजल, प्रकाश व्यवस्था, घाट एवं परिसर विकास सहित विभिन्न कार्य किए जाएंगे।

सिंहस्थ-2028 की तैयारियों को मिलेगा बड़ा बल

प्रदेश सरकार का मानना है कि सिंहस्थ-2028 में करोड़ों श्रद्धालुओं के उज्जैन आने की संभावना को देखते हुए धार्मिक स्थलों का आधुनिक स्वरूप विकसित करना आवश्यक है। मंदिरों के उन्नयन से न केवल श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी, बल्कि धार्मिक पर्यटन, स्थानीय रोजगार और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को भी नई गति मिलेगी। इससे उज्जैन की पहचान एक विश्व स्तरीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक नगर के रूप में और मजबूत होगी।

लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेस-वे पर नहीं चला सकेंगे बाइक

लखनऊ। लखनऊ-कानपुर एक्सप्रेस-वे तैयार हो चुका है। 13 जुलाई यानी कल रक्षामंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी और सीएम योगी इसका उद्घाटन करेंगे। 14 जुलाई से यह आम लोगों के लिए खुल जाएगा। यह एक्सप्रेस-वे 63 किलोमीटर लंबा है। अभी लखनऊ से कानपुर जाने में ढाई से 3 घंटे लगते हैं। एनएचएआई का दावा है कि अब यह सफर सिर्फ 45 मिनट में पूरा होगा। हालांकि, इसके लिए लोगों को करीब तीन गुना ज्यादा टोल चुकाना होगा। दोपहिया वाहनों को एक्सप्रेस-वे पर चलने की अनुमति नहीं होगी। यह देश का पहला बैरियर-लेस एक्सप्रेस-वे होगा। टोल प्लाजा से 500 मीटर पहले लगे ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन कैमरे और फास्टैग रीडर बिना गाड़ी रोके अपने आप टोल काट लेंगे।

राममंदिर- रिटायर आईएएस बनेगा सीईओ 3 साल के लिए नियुक्ति

अयोध्या। अयोध्या राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने शनिवार को कहा- यह एक तरह का कलंक है। इसका हम सभी को सिर्फ खेद ही नहीं है, बल्कि हम खुद को छोटा महसूस कर रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि व्यवस्था में सुधार होगा और इस तरह की घटनाएं दोबारा नहीं होंगी। उन्होंने कहा- एक हाईलेवल समिति बनाई गई है। संभवतः जज उसके अध्यक्ष हैं। वे अपना निर्णय और संस्तुति ट्रस्ट को देंगे। ट्रस्ट उस पर विचार करेगा। नृपेंद्र मिश्रा राम मंदिर निर्माण समिति की दूसरे दिन की बैठक में हिस्सा लेने शनिवार को रामकथा संग्रहालय पहुंचे। इससे पहले शुक्रवार को राम मंदिर परिसर में हुई बैठक में ट्रस्ट का कोई सदस्य नहीं पहुंचा था।

महाराष्ट्र के सोशल वेलफेयर हॉस्टल में 40 बच्चे बीमार, 5 आईसीयू में

नंदुरबार। महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के शहादा स्थित सोशल वेलफेयर हॉस्टल में 40 बच्चे फूड पॉइजनिंग और गैस्ट्राइटिस की चपेट में आ गए। जिला कलेक्टर मिथाली सेठी ने बताया कि इनमें से 25 बच्चों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 20 बच्चों का इलाज शहादा ग्रामीण अस्पताल में चल रहा है, जबकि ऑक्सीजन और ब्लड प्रेशर की समस्या होने पर 5 बच्चों को आईसीयू में भर्ती किया गया है। उन्होंने कहा कि सभी बच्चों की हालत फिलहाल स्थिर है और डॉक्टरों से लगातार जानकारी ली जा रही है। कलेक्टर ने बताया कि बच्चों के खाने और उल्टी के सैंपल जांच के लिए भेजे गए हैं। रिपोर्ट आने के बाद तय किया जाएगा कि लापरवाही किसकी थी।

बोल बेबी बोल फेम सिंगर एस जानकी का निधन

मैसूर। मशहूर प्लेबैक सिंगर एस. जानकी का शनिवार को मैसूर के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। वह 88 साल की थीं। शुक्रवार रात उन्हें सांस लेने में तकलीफ हुई थी। इसके बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली। एस. जानकी ने अपने करियर में 48 हजार से ज्यादा गाने रिकॉर्ड किए। इनमें ज्यादातर हिंदी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु और मलयालम भाषाओं में हैं। एस. जानकी को ह्यबोल बेबी बोल (मेरी जंग), प्रभु मोरे अवगुण (सुर संगम), ओ मारिया (सागर), गोपाला-गोपाला (हमसे है मुकाबला) जैसे हिंदी गानों के लिए जाना जाता है। एस. जानकी को चार नेशनल फिल्म अवॉर्ड और कई राज्य-स्तरीय सम्मानों से नवाजा गया है।

केरल क्रिकेट लीग नीलामी में सिबिन गिरीश बने सबसे महंगे खिलाड़ी

कोच्चि। केरल क्रिकेट लीग (केसीएल) के तीसरे सीजन की खिलाड़ी नीलामी में युवा क्रिकेटर सिबिन गिरीश सबसे महंगे खिलाड़ी बनकर उभरे। एलेप्पी रिपल्स ने उन पर 11.80 लाख रुपये की रिकॉर्ड बोली लगाकर अपनी टीम में शामिल किया। इस नीलामी में कई खिलाड़ियों पर जमकर बोली लगी और छह फ्रेंचाइज़ियों ने अपनी रणनीति के अनुसार टीमों को अंतिम रूप दिया। कुल 89 खिलाड़ियों की खरीद के साथ नीलामी प्रक्रिया संपन्न हुई, जबकि इससे पहले 18 खिलाड़ियों को पहले ही रिटेन किया जा चुका था। सिबिन गिरीश की बेस प्राइस केवल 75 हजार रुपये थी और उन्हें कैटेगरी-सी में रखा गया था।

खबर एक नजर...

अखाड़ा परिषद महामंत्री ने किया निमार्णाधीन नीलकंठ महादेव मंदिर का निरीक्षण

उज्जैन। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महामंत्री और जूना अखाड़ा के मुख्य संरक्षक श्रीमहंत हरि गिरि महाराज ने शनिवार को नीलगंगा स्थित जूना अखाड़ा का दौरा किया। यहां उन्होंने नीलकंठ महादेव और नील गंगा भवन स्थित सिद्ध बाबा शिवगिरी महाराज के समाधि स्थल पर पूजन-अभिषेक किया। आगामी सिंहस्थ 2028 की तैयारियों को लेकर श्रीमहंत हरि गिरि महाराज ने निमार्णाधीन नीलकंठ महादेव मंदिर के कार्यों का इंजीनियरों के साथ सघन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण कार्य की प्रगति जानी और संबंधित इंजीनियरों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जूना अखाड़ा के अंतरराष्ट्रीय सचिव श्रीमहंत रामेश्वर गिरी महाराज, थानापति महंत नीलकंठ गिरी महाराज, डॉ. गोविंद सोलंकी, डॉ. राहुल कटारिया, इंजीनियर विनय पाटीदार और श्री बंसल मुख्य रूप से मौजूद थे।

9 अगस्त को होगी चारद्वार साइकिल यात्रा, अमित पंड्या बने संयोजक

उज्जैन। सोसायटी ऑफ ग्लोबल साइकिल द्वारा 9 अगस्त को आयोजित होने वाली चारद्वार साइकिल यात्रा-2026 के सफल संचालन के लिए संगठनात्मक दायित्वों की घोषणा कर दी गई है। संस्था ने अमित पंड्या को यात्रा का संयोजक तथा रोहित येवले को सह-संयोजक नियुक्त किया है। संस्था के अध्यक्ष उत्कर्ष सिंह सेंगर एवं सचिव विवेक मेश्राम ने इन नियुक्तियों की जानकारी दी।

महाकाल सवारी नए और चौड़े मार्ग से निकालने की मांग

उज्जैन। शहर में चल रहे विकास और चौड़ीकरण कार्यों को देखते हुए बाबा महाकाल की सवारी नए और व्यापक मार्ग से निकालने की मांग उठी है। इंदौर गेट व्यापारी एसोसिएशन के अध्यक्ष व पूर्व मंडी डायरेक्टर गोपाल यादव ने मुख्यमंत्री से रूबरू मुलाकात कर उन्हें इस संबंध में पत्र सौंपा। मुख्यमंत्री ने इस विषय पर तुरंत कलेक्टर से चर्चा भी की है। ज्ञापन में बताया गया है कि वर्तमान में सवारी मार्ग के ढाबा रोड व सराफा क्षेत्र में चौड़ीकरण कार्य प्रचलित है। आमजन को असुविधा से बचाने और शत-प्रतिशत श्रद्धालुओं को दर्शन लाभ देने के लिए सवारी को नवीन प्रस्तावित मार्ग से निकाला जाना चाहिए। पत्र के अनुसार महाकाल मंदिर से क्षिप्रा नदी तक सवारी परम्परागत मार्ग से निकाली जावें। क्षिप्रा पूजन के पश्चात रामानुजकोट, दानीगेट, बिलोटीपुरा, केडी गेट, खजूरवाली मस्जिद से गीता कालोनी, निकास, बड़ा तेलीवाड़ा, कंठाल, नईसड़क, एटलस चौराहा, दौलतगंज, इंदौरगेट, हरिफाटक ब्रिज, महाकाल लोक होकर सीधे ही महाकाल मंदिर पहुंचे। मार्ग विस्तारीकरण के कारण सवारी के वापस मंदिर पहुंचने के समय में भी बदलाव का अनुरोध किया गया है। पत्र में मांग की गई है कि महाकाल मंदिर पहुंचने का समय जो संध्या 7 बजे का है, उसे बढ़ाकर रात्रि 10 बजे तक किया जावे ताकि समय पर शयन आरती हो सके।

नीलम पांड्या बनीं दिगंबर जैन महिला परिषद की केंद्रीय उपाध्यक्ष

उज्जैन। श्रीमती नीलम पांड्या को अखिल भारतीय दिगंबर जैन महिला परिषद के केंद्रीय उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। उनके इस मनोनयन पर समाजजनों में हर्ष व्याप्त है। नीलम पांड्या पूर्व में भी परिषद की प्रांतीय अध्यक्ष सहित कई अहम केंद्रीय और प्रांतीय पदों की जिम्मेदारी संभाल चुकी हैं। संस्था के प्रति उनका सतत समर्पण और कर्मनिष्ठ व्यवहार उन्हें इस महत्वपूर्ण पद के लिए उपयुक्त बनाता है। केंद्रीय उपाध्यक्ष नियुक्त होने पर स्नेहलता विनायका, संगीता सोगानी, रचना भारिल्ल, मधु कोठारी, डॉली वोहरा, श्रुति बड़जात्या, अंजू गंगवाल, राखी जैन, नीलज छाबड़ा, ज्योति जैन, मीना भूषण और भावना जैन ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी हैं।

थाईलैंड और म्यांमार के भिक्खुओं के मार्गदर्शन में प्रतिभागियों ने ग्रहण किए पंचशील

उज्जैन समेत कई शहरों में एक दिवसीय शिविर संपन्न, कुशीनगर में श्रामणेर पब्बज्जा शिविर का भव्य शुभारंभ

पंचशील और 227 विनय नियमों का प्रशिक्षण

भिक्खु नन्दरतन महाथेरो का जन्मोत्सव मनाया

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

श्रीलंका बुद्ध विहार और भारत श्रीलंका फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में भगवान बुद्ध की निर्वाण स्थली कुशीनगर में श्रामणेर पब्बज्जा शिविर की शुरूआत हुई है। यह सात दिवसीय शिविर 10 जुलाई से 17 जुलाई 2026 तक आयोजित किया जा रहा है। इस पावन अवसर पर भिक्खु नन्दरतन महाथेरो का जन्मोत्सव भी उल्लास के साथ मनाया गया।

थेरवाद बौद्ध परम्परा के अंतर्गत शिविर के सभी प्रतिभागियों को पंचशील और त्रिशरण से अवगत कराया गया। चीवर देने और भिक्खु बनने की प्रारंभिक प्रक्रिया को ठीक से समझाने के लिए प्रतिभागियों को सफेद वस्त्र प्रदान कर निष्क्रमण के 8 शील दिए गए। यह पूरी प्रक्रिया थाईलैंड के भिक्खु राजबोधि थेरो और म्यांमार के भिक्खु नन्दका थेरो के मार्गदर्शन में संपन्न हुई। शिविर का मुख्य उद्देश्य साधना, विनय के नियमों का पालन और एक अच्छे नागरिक का निर्माण करना है। प्रशिक्षण के दौरान भिक्खुओं को चारों पच्चवेखना, पूजा वंदना और 227 विनय के नियमों की विस्तार से जानकारी दी गई।

भिक्खु नन्दरतन महाथेरो की देखरेख में आयोजित इस शिविर में थाईलैंड के भिक्खु फ्रा थेपचोट, फ्रा इन्द्र सिरी, फ्रा अनुसरोन सिरीत्रकुंग, फ्रा मानचाई सोपानहरी और वियतनाम की भिक्खुनी हयूथिन विशुद्धी का विशेष मार्गदर्शन मिला। साथ ही भन्ते सुमेध रतन, भिक्खु आलोक थेरो, भिक्खु डॉ. तजेन्द्र थेरो, भन्ते इन्द्रसिरी, तेजवन्ता, सुमना, नन्दसार, रतन शाक्य, संघपाल और शीलरतन का विशेष सहयोग रहा।

शिविर में मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और कैमूर बिहार से अनेक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें बीना मध्य प्रदेश के किशन अग्रवाल सहित जगदेव सिंह, प्रदीप शास्त्री, उत्कर्ष, दीपांशु, निर्मल बौद्ध, विकास कुमार, अमित कुमार गौतम, राम समुझ, पारस नाथ, राम नयन, बैजनाथ बाबवा, बलीराम, अंश, रवीन्द्र नन्दलाल, राम निवास कुशवाह, युगल किशोर, शाक्य परमात्मा मौर्य, राधेश्याम मौर्य, रामनरायन, अश्व वर्धन कुशवाह, चन्द्र शेखर प्रसाद और आयुष वर्धन प्रमुख रूप से शामिल रहे।

सह-आयोजक भिक्खु डॉ. सुमेध थेरो ने बताया कि श्रामणेर प्रशिक्षण के तहत हाल ही में देश के विभिन्न हिस्सों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी श्रृंखला में भारत श्रीलंका फाउंडेशन के तत्वावधान में उज्जैन, दतिया, चेन्नई और दिल्ली में एक दिवसीय शिविर आयोजित कर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

इससे पूर्व 2 से 12 अप्रैल तक झाँसी में शिविर आयोजित हुआ था, जिसमें 11 अप्रैल को ज्योतिराव फुले की 200वीं जयंती पर राजकीय संग्रहालय में संगोष्ठी और बौद्ध धम्म व संघ से संबंधित पुस्तकों का विमोचन किया गया था। इसके बाद 5 अप्रैल 2026 को भिक्खुओं ने साँची तीर्थ स्थल के दर्शन कर पूजा वंदना की थी तथा 19 से 25 अप्रैल तक बोधगया में भी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था। फाउंडेशन की विशेष परियोजना के तहत भिक्खुओं के लिए 'मैन्युअल', 'सन्तो पर थेरवाद की छाया' तथा बौद्ध महिलाओं के लिए दिशानिर्देश पुस्तिकाओं को तैयार कर प्रतिभागियों के बीच वितरित किया गया है।

उच्च शिक्षा विभाग की समस्याओं को लेकर प्राध्यापक संघ ने मुख्यमंत्री को सौंपा 6 सूत्रीय ज्ञापन

शिक्षकों, ग्रंथपालों और क्रीड़ा अधिकारियों की पदनाम व क्रमोन्नति से जुड़ी मांगों के निराकरण की उठाई मांग

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

प्रांतीय शासकीय महाविद्यालय प्राध्यापक संघ ने शनिवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को 6 सूत्रीय मांग पत्र सौंपा। इसमें प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग में कार्यरत शिक्षकों, ग्रंथपालों और क्रीड़ा अधिकारियों की वर्षों से लंबित मांगों के जल्द निराकरण का आग्रह किया गया है। संघ का कहना है कि बार-बार ज्ञापन देने और चर्चा के बावजूद विभाग स्तर पर इन न्याय संगत मांगों का समाधान नहीं किया जा रहा है। ज्ञापन संघ के प्रांतीय अध्यक्ष प्रो. आनंद शर्मा और संरक्षक प्रो. कैलाश त्यागी के मार्गदर्शन में उज्जैन संभाग अध्यक्ष डॉ. मोहन निमोले और अजाक्स उच्च शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार मालवीय द्वारा मुख्यमंत्री को सौंपा गया। इस अवसर पर डॉ. दिलीप सोनी और डॉ. जीएल खागोड़े भी उपस्थित रहे।

संघ द्वारा सौंपे गए मांग पत्र में मुख्य रूप से वर्ष 2004 और 2005 में नियुक्त बैकलॉग सहायक प्राध्यापकों की परिवीक्षा अवधि नियुक्ति दिनांक से दो वर्ष बाद समाप्त कर करियर प्रोन्नति का लाभ देने तथा योग्यता अर्जित न कर पाने वाले सहायक प्राध्यापकों को वर्ष 2028 तक का अवसर देने की मांग की गई है। इसके साथ ही क्रीड़ा अधिकारियों व ग्रंथपालों को सहायक प्राध्यापक, सह-प्राध्यापक और प्राध्यापक का पदनाम देते हुए सेवानिवृत्ति आयु 65 वर्ष करने और यूजीसी नियमों के तहत पे-मैट्रिक्स-14 का लाभ देने का मुद्दा उठाया गया है।

संघ ने वर्ष 2009, 2011 और 2019 में नियमितीकरण से वंचित सहायक प्राध्यापकों की परिवीक्षा अवधि समाप्त कर उन्हें शीघ्र करियर एडवांसमेंट का लाभ देने तथा छानबीन समिति की बैठक प्रति सप्ताह विषयवार आयोजित करने की मांग रखी है। इसके अलावा पात्रता के अनुसार सहायक और सह-प्राध्यापकों को पदनाम देने, सेवानिवृत्त शिक्षकों के पेंशन, वेतन निर्धारण, अर्जित अवकाश व समूह बीमा भुगतान को प्राथमिकता से निपटाने और पिछले 10 वर्षों से लंबित परामर्शदात्री समिति की बैठक सामान्य प्रशासन विभाग के नियमानुसार जल्द आयोजित करने की मांग भी ज्ञापन में प्रमुखता से शामिल है।

उज्जैन के महाकाल परिसर में 18 से सजेगा सतरंगी सावन मेला

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

शहर के महाकाल परिसर में माहेश्वरी समाज के फ्रेंड्स ग्रुप द्वारा 18 और 19 जुलाई को दो दिवसीय सतरंगी सावन मेला आयोजित किया जा रहा है। शनिवार और रविवार को आयोजित होने वाले इस मेले में सावन का उत्साह और विभिन्न आकर्षण एक साथ देखने को मिलेंगे। मेला प्रतिदिन सुबह 10 बजे से रात 10 बजे तक आमजन के लिए खुला रहेगा। मेले के मुख्य आकर्षणों में ढेरों शॉपिंग स्टॉल, आकर्षक खरीदारी के विकल्प, शानदार उपहार, मजेदार तंबोला और स्वादिष्ट फूड जोन शामिल रहेंगे। आयोजकों ने बताया कि मेले में स्टॉल बुकिंग प्रारंभ हो चुकी है। यह बुकिंग सभी समाज के सभी वर्गों के लिए खुली है। स्टॉल बुकिंग के लिए संगीता भूतड़ा, शीतल मूंदड़ा और पायल भूतड़ा से संपर्क किया जा सकता है। बाहर से आने वाले सदस्यों की सुविधा के लिए आयोजन स्थल पर ही रात्रि विश्राम की व्यवस्था भी की गई है। इसके तहत एसी रूम 1500 रुपए और नॉन-एसी रूम 1000 रुपए में उपलब्ध रहेंगे। कमरे की सुविधा के लिए आयोजकों को पहले से सूचना देना अनिवार्य होगा। आयोजन को सफल बनाने और अतिथियों के स्वागत के लिए समिति की संगीता भूतड़ा, शीतल मूंदड़ा, पायल भूतड़ा, आरती सोड़ानी, निशा मूंदड़ा, सुनीता जांवधिया, निर्मला झंवर, सीमा कासट, सीमा पलोड़ और राजश्री भूतड़ा तैयारियों में जुटी हैं। आयोजकों ने शहरवासियों से सपरिवार और मित्रों के साथ पधारकर सावन मेले का भरपूर आनंद लेने की अपील की है।

बास्केटबॉल स्पर्धा के लिए उज्जैन की टीम घोषित, हर्षिता राय बनीं कप्तान

इंदौर में 12 से 15 जुलाई तक होगी चैंपियनशिप, पिछले वर्ष टीम ने हासिल किया था तीसरा स्थान

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

मध्य प्रदेश बास्केटबॉल एसोसिएशन के तत्वावधान में इंदौर में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय 'अस्मिता सीनियर महिला बास्केटबॉल चैंपियनशिप' के लिए उज्जैन कॉरपोरेशन एरिया बास्केटबॉल एसोसिएशन की बालिका टीम घोषित कर दी गई है। स्पर्धा में उज्जैन की टीम का नेतृत्व हर्षिता राय करेंगी।

संगठन की सचिव ऋतु शर्मा ने बताया कि 12 से 15 जुलाई तक होने वाली इस चैंपियनशिप के लिए टीम में हर्षिता राय (कप्तान), समीक्षा भदौरिया, सेजल डागर, वृतिका कुरैल, तेजस्वी मांगरोले, परी मित्तल, खुशी आनंद, रिया करडवाल और अंकिता गोंदिया का चयन किया गया है। टीम की कोच मनीषा पंवार और मैनेजर प्रगति जैन होंगी।

उल्लेखनीय है कि उज्जैन की टीम ने पिछले वर्ष भी शानदार प्रदर्शन करते हुए चैंपियनशिप में तृतीय स्थान प्राप्त किया था। टीम के चयन और आगामी स्पर्धा में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए संगठन की अध्यक्ष ज्योति शर्मा, प्रशिक्षक विनोद पांचाल और प्रियंका संत ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी हैं।

पदोन्नति की सौगात पर राज्य कर्मचारी संघ ने किया मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का अभिनंदन

सीएम के नगर आगमन पर अंग वस्त्र पहनाकर जताया आभार

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

मध्य प्रदेश शासन द्वारा सभी विभागों में युद्ध स्तर पर की जा रही कर्मचारियों की पदोन्नति से प्रदेश के कर्मचारी जगत में हर्ष व्याप्त है। कर्मचारियों को पदोन्नति की यह बड़ी सौगात देने पर मध्य प्रदेश राज्य कर्मचारी संघ की उज्जैन जिला एवं संभाग इकाई ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नगर आगमन पर उनका भव्य स्वागत व अभिनंदन किया।

संघ के जिला प्रवक्ता राकेश पाठक ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निजी संकल्प के कारण ही कर्मचारियों की रुकी हुई पदोन्नति संभव हो सकी है। उनके इस ऐतिहासिक निर्णय पर आभार व्यक्त करने के लिए प्रदेश संगठन मंत्री मनोहर गिरी के नेतृत्व में मुख्यमंत्री का स्वागत किया गया।

इस अवसर पर संघ के संभाग अध्यक्ष मांगीलाल पाटीदार, जिला अध्यक्ष ओम प्रकाश यादव, कार्यकारी अध्यक्ष शैलेंद्र सिंह ठाकुर, सचिव राम सिंह बनिहार, संभागीय कोषाध्यक्ष परशुराम कपाड़िया और राज्य पेंशनर्स संघ के संभाग अध्यक्ष शमशेर सिंह तोमर ने मुख्यमंत्री को अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया।

स्वागत कार्यक्रम में चंद्रकांत फटाले, निहारिका श्रीवास्तव, विष्णु पांचाल, अशोक मालवीय, राकेश पाठक, प्रवीण जोशी, पुरुषोत्तम शर्मा, राजीव सिंह सेंगर, विजय परिहार, राधा मोहन शर्मा, अंकुश गुप्ता, राजेश चौहान, घनश्याम पाटीदार, रेखा सिंह, आशा गोयल, रेखा कानपुरी, स्वाति मालवीय, गोविंद मदारिया, भूपसिंह सेमिल, ब्रजराज सोलंकी, पुष्प डावर, अनिता चौहान, रामलखन वाघेला, पायल अंकिल, राजनंदिनी वर्मा और कृतिका राठौर प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

प्रयास लाए रंग, सम्मान समारोह में मिला आमंत्रण, उज्जैन के शिक्षकों ने जताया सीएम का आभार

मुख्यमंत्री की सौगात, तकनीकी अतिथि व्याख्याताओं को भी मिलेंगी उच्च शिक्षा के समान सुविधाएं

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

प्रदेश के तकनीकी शिक्षा विभाग के अतिथि व्याख्याताओं को भी अब उच्च शिक्षा विभाग के अतिथि विद्वानों के समान सुविधाएं मिलेंगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित राज्य स्तरीय सम्मान समारोह में इसकी घोषणा की। शुरूआत में इस कार्यक्रम से वंचित रखे गए तकनीकी व्याख्याताओं को उज्जैन इंजीनियरिंग कॉलेज के शिक्षकों के विशेष प्रयासों के बाद अंतिम समय में आमंत्रित किया गया। इस निर्णय से तकनीकी शिक्षकों में हर्ष है और उन्होंने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया है।

दरअसल 10 जुलाई को रवींद्र भवन में अतिथि विद्वानों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में उच्च शिक्षा विभाग के विद्वानों के लिए हरियाणा मॉडल लागू करते हुए स्थायीकरण की सौगात दी गई। आयोजन में तकनीकी विभाग के व्याख्याताओं की अनदेखी की गई थी। 9 जुलाई की रात उज्जैन के अतिथि व्याख्याताओं ने सक्रियता दिखाते हुए मुख्यमंत्री और वरिष्ठ अधिकारियों तक अपनी बात पहुंचाई। परिणामस्वरूप तकनीकी शिक्षकों को भी कार्यक्रम में विधिवत आमंत्रित किया गया।

करीब पांच हजार शिक्षकों की उपस्थिति वाले इस समारोह में मुख्यमंत्री ने मंच से तकनीकी शिक्षा विभाग का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने आश्वस्त किया कि उच्च शिक्षा के समान ही तकनीकी अतिथि व्याख्याताओं को भी सभी सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।

इन शिक्षकों ने जताया आभार

समारोह में तकनीकी शिक्षा विभाग को शामिल करने और उनकी मांगे मानकर सौगात देने पर उज्जैन के व्याख्याताओं ने मुख्यमंत्री का आभार माना है। आभार व्यक्त करने वालों में डॉ. तपस्या ठाकुर, वैशाली गायकवाड़, प्रियंका यादव, नैना सोलंकी, रमा धनरिया, राहुल शर्मा, राहुल पालड़िया, प्रफुल दुबे, राकेश पटवा, पवन पाटीदार, विदुषी, शिवानी कुमावत, मनीष मंडेलिया, साजिद कुरैशी और अबुतालिब शामिल हैं।

अर्जी वाले हनुमान मंदिर परिसर में बनेगा अमर शहीद बलराम जोशी का भव्य स्मारक

उज्जैन। अमर शहीद पंडित बलराम जोशी की 27वीं पुण्यतिथि के अवसर पर शहीद पार्क स्थित स्मारक पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान यह घोषणा की गई कि शहर के अर्जी वाले हनुमान मंदिर परिसर में अमर शहीद बलराम जोशी का भव्य एवं दिव्य मंदिर रूपी स्मारक स्थापित किया जाएगा। कार्यक्रम में संतों, साहित्यकारों और देशभक्तों ने शहीद को पुष्पांजलि अर्पित कर उनके बलिदान को याद किया।

श्रद्धांजलि सभा में महामंडलेश्वर गुरु मां आनंदमयी ने भावुक होते हुए कहा कि बलराम जोशी देशभक्ति के नायाब हीरे थे। देश की रक्षा के लिए आज हर घर में बलराम जैसे वीर का होना आवश्यक है। स्वामी मुस्कुराके ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हम दिव्य नहीं हैं दिनकर से, लेकिन छोटी सी चिंगारी हैं, हम जहां खड़े हैं वहीं राष्ट्र की अस्मत के पुजारी हैं।

भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव भव्य रूप से मनाया जाएगा

जन्माष्टमी पर्व तैयारियों को लेकर यादव समाज की बैठक आज रविवार को सुबह 10 बजे आयोजित की गई

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर्व जन्माष्टमी पर (4 सितंबर) को यादव अहीर समाज द्वारा आराध्य देव भगवान श्री कृष्ण का पूजन कर समाज जनों का चल समारोह निकलेगा। जन्माष्टमी पर्व की तैयारी को लेकर यादव महासभा नगर उज्जैन द्वारा समाज जनों की बैठक आज 12 जुलाई रविवार को सुबह 10 बजे शिप्रा गार्डन नीलगंगा अखाड़े के पास आयोजित की गई है।

यादव महासभा उज्जैन के नगर अध्यक्ष नारायण यादव ने बताया कि इस वर्ष भी भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव पर 4 सितंबर 2026 को जन्माष्टमी पर्व यादव समाजजन द्वारा धूमधाम से मनाया जाएगा। इस अवसर पर भगवान श्री कृष्ण का पूजन कर पालकी में विराजित कर यादव समाज जनों का चल समारोह नगर के प्रमुख मार्गों से होकर निकलेगा। जन्माष्टमी पर्व चल समारोह की तैयारी को लेकर यादव महासभा नगर के पदाधिकारी व सभी समाज जनों की बैठक रविवार को सुबह 10 बजे नीलगंगा अखाड़े के पास स्थित शिप्रा गार्डन पर आयोजित की गई। बैठक में जन्माष्टमी पर्व चल समारोह समिति का गठन करने, चल समारोह का रूट तय करने के साथ ही जन्माष्टमी पर्व की भव्यता को लेकर तैयारियों के संबंध चर्चा की जाएगी। बैठक में समाजजनों के सुझाव भी लिए जाएंगे। नगर अध्यक्ष नारायण यादव ने सभी समाज जनों से बैठक में उपस्थित होने की अपील की है।

उज्जैन
रविवार
12
जुलाई, 2026

दैनिक
ब्रह्मास्त्र

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥

अर्थः हे सूर्य के समान प्रकाशस्वरूपे ! तुम्हारे ही तप से वृक्षों में श्रेष्ठ मंगलमय बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ। उसके फल हमारे बाहरी और भीतरी दारिद्र्य को दूर करें।

खबर एक नजर...

शिवपुरी के बीएससी नर्सिंग छात्र की मौत, दो बाइकों की टक्कर में गई जान

इंदौर। सड़क हादसे में शिवपुरी जिले के खरई गांव निवासी 21 वर्षीय युवक की मौत हो गई। मृतक विकास धाकड़ पिछले एक वर्ष से इंदौर में रहकर बीएससी नर्सिंग की पढ़ाई कर रहा था। हादसे की सूचना मिलने पर परिजन इंदौर पहुंचे। शनिवार को पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस के अनुसार, विकास धाकड़ शुक्रवार रात अपने दोस्तों के साथ फिल्म देखकर दोपहिया वाहन से लौट रहा था। रात करीब 11:30 बजे सामने से आ रहे एक अन्य दोपहिया वाहन से उसकी आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने विकास को तत्काल नजदीकी अस्पताल पहुंचाया, लेकिन उपचार के दौरान डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी मिलने पर विकास के परिजन शिवपुरी से इंदौर पहुंचे। पुलिस ने शनिवार को शव का पोस्टमार्टम कराकर आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी की और शव परिजनों को सौंप दिया। विकास का पार्थिव शरीर शनिवार देर शाम तक उसके गृहग्राम खरई पहुंचने की संभावना जताई गई, जहां अंतिम संस्कार किया जाएगा।

कपड़ा व्यापारियों को दिया धोखा, हैदराबाद से मुख्य आरोपी गिरफ्तार

इंदौर। राजबाड़ा इलाके के कुछ रेडिमेड व्यापारियों के साथ हुई धोखाधड़ी के मामले में क्राइम ब्रांच ने हैदराबाद से मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया। ट्रांजिट रिमांड पर आरोपी को इंदौर लाए। अब उससे पूछताछ कर रहे हैं। इंदौर क्राइम ब्रांच डीसीपी राजेश कुमार त्रिपाठी ने कहा 26 मार्च 2025 को राजबाड़ा के रेडिमेड कपड़ा व्यापारी मुकेश जैन सहित 16 व्यापारियों ने पुलिस कमिश्नर ऑफिस में उनके साथ हुई ठगी की शिकायत की। शिकायत में बताया दलाल अशोक गोपलानी व उसके साथी कार्तिक ने खुद को बाहर की प्रतिष्ठित व्यापारिक फर्मों से जुड़े होने का विश्वास दिलाया और इंदौर के व्यापारियों को मुंबई, हैदराबाद, बेंगलुरु, तेलंगाना और राजस्थान की विभिन्न फर्मों से व्यापार कराया और 30 से 45 दिनों में सभी पेमेंट का आश्वासन दिया। दलालों के विश्वास में आकर व्यापारियों ने विभिन्न फर्मों को लगभग 1.70 करोड़ रुपए का रेडिमेड गारमेंट्स, ड्रेस मटेरियल व अन्य कपड़ा सामग्री उधार में भेजी। इनमें से हैदराबाद स्थित रॉयल क्रिएशन के संचालक मोहम्मद अकरम ने अकेले 40 लाख रुपए का माल लिया, लेकिन तय समय के बाद भी पेमेंट नहीं किया। व्यापारियों ने तगादा किया तो वह और उसके साथी टालमटोल करने लगे, फिर मोबाइल बंद कर लिए। इंदौर के व्यापारी हैदराबाद में आरोपी के ठिकाने पहुंचे, पर कोई वैध व्यापारिक गतिविधि नहीं मिली और आरोपी फरार मिला।

क्राइम ब्रांच की गिरफ्त में 10-10 हजार के इनामी बदमाश

इंदौर। इंदौर क्राइम ब्रांच ने मंदसौर से 10-10 हजार के दो इनामी बदमाशों को गिरफ्तार किया। लंबे समय से इनकी तलाश की जा रही थी। टीम को मंदसौर में इनकी लोकेशन मिली और दबिश देकर उन्हें धरदबोचा। डीसीपी क्राइम ब्रांच इंदौर राजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि एनडीपीएस एक्ट के मामले में क्राइम ब्रांच ने पूर्व में खालिद हुसैन पिता मुबारिक हुसैन, नदीम खान पिता अजीज खान को लगभग 151 ग्राम एमडी ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया था। जांच में सामने आया कि शाहिद पिता युसूफ खान और महफूज पिता मुबारिक खान की भी इस मामले में संलिप्तता है। मगर दोनों लगातार फरार चल रहे थे। दोनों आरोपियों की गिरफ्तार नहीं होने पर इंदौर पुलिस ने 10-10 हजार का इनाम घोषित किया गया। क्राइम ब्रांच की टीम एमडी ड्रग्स के मामले में लगातार इन दोनों आरोपियों की तलाश में लगी थी। मुखबीर की सूचना और टेक्निकल चीजों के आधार पर क्राइम ब्रांच को दोनों फरार आरोपियों के मंदसौर में छिपे होने की जानकारी मिली। टीम मंदसौर पहुंची और दोनों आरोपियों को धरदोबाचा और इंदौर ले आई। दोनों से पूछताछ कर एमडी ड्रग्स के स्त्रोत, सप्लाई नेटवर्क एवं अन्य संलिप्त व्यक्तियों के संबंध में विस्तृत पूछताछ कर जानकारी निकाल रही है और आगे की कार्रवाई कर रही है। टीम को ये जानकारी मिली है कि आरोपी शाहिद मंडी में मजदूरी करता है, जबकि मगफूज पेशे से ड्राइवर है।

इंदौर समेत टढ के 27 जिलों में आज हल्की बारिश

इंदौर। मध्य प्रदेश में अगले 4 दिन बादल और हल्की बारिश का दौर ही रहेगा। कहीं भी भारी बारिश का अलर्ट नहीं है। मौसम विभाग ने इंदौर समेत 27 जिलों में रविवार को बूंदाबांदी का अलर्ट जारी किया है। भोपाल, ग्वालियर और उज्जैन में दिन के तापमान में बढ़ोतरी होगी। रविवार को जिन जिलों में आंधी-बारिश का अनुमान है, उनमें भिंड, दतिया, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, देवास, इंदौर, खरगोन, धार, बड़वानी, झाबुआ और आलीराजपुर शामिल हैं। वहीं, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, सागर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दमोह, जबलपुर, कटनी, उमरिया, भोपाल, सीहोर, राजगढ़, शाजापुर, आगर-मालवा, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर और नीमच में मौसम साफ रहने का अनुमान है।

धरने पर बैठे छात्रों को कॉकरोच जनता पार्टी का समर्थन

छात्रों से वीडियो कॉल पर की बात, 14 जुलाई की रैली में शामिल हो सकते हैं दीपके

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

नीट पेपर लीक मामले सहित 23 सूत्रीय मांगों को लेकर इंदौर के टंट्या भील चौराहे पर छात्रों का धरना-प्रदर्शन जारी है। अब छात्र 14 जुलाई को महाआंदोलन की तैयारी कर रहे हैं। इसको लेकर तैयारियां तेज कर दी गई हैं।

खास बात यह है कि छात्रों के इस धरना-प्रदर्शन को कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) का समर्थन मिल रहा है। पार्टी के प्रमुख अभिजीत दीपके ने वीडियो कॉल के माध्यम से अनिश्चितकालीन आंदोलन पर बैठे छात्रों से बात की और 14 जुलाई के महाआंदोलन में शामिल होने की संभावना जताई। टंट्या भील चौराहे पर धरने पर बैठे छात्रों को 11 दिन से अधिक समय हो चुका है। आंदोलन लगातार जारी है, जिसमें बड़ी संख्या में छात्र शामिल हो रहे हैं। वहीं, कुछ छात्र पिछले 11 दिनों से लगातार धरने पर बैठे हैं। अब आंदोलन को और व्यापक स्वरूप देने की तैयारी की जा रही है। धरने पर बैठे अरुण बड़ोले सहित अन्य छात्रों ने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रमुख अभिजीत दीपके से वीडियो कॉल पर बातचीत की। इस दौरान उन्होंने आंदोलन की पूरी जानकारी ली और छात्रों को अपना समर्थन दिया। उन्होंने आंदोलन की वर्तमान स्थिति, छात्रों का हालचाल जाना तथा उनके साहस और एकजुटता की सराहना की।

14 जुलाई को रैली और कलेक्टर कार्यालय का घेराव

- आंदोलनकारी पवन अहिरवार ने बताया कि वीडियो कॉल के दौरान अभिजीत दीपके ने कहा कि वे छात्रों की न्यायसंगत मांगों का पूरा समर्थन करते हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि 14 जुलाई को इंदौर में होने वाले महाआंदोलन में उनके शामिल होने की पूरी संभावना है और वे आंदोलन को सहयोग देंगे।
- आंदोलनकारी छात्रों ने उनका आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देशभर से मिल रहा समर्थन उनके मनोबल को और मजबूत कर रहा है। उन्होंने छात्र-युवाओं और सामाजिक संगठनों से 14 जुलाई के महाआंदोलन में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर छात्रों की आवाज बुलंद करने की अपील की।
- पवन अहिरवार ने बताया कि 14 जुलाई को सुबह 11 बजे टंट्या भील चौराहे से कलेक्टर कार्यालय तक रैली निकाली जाएगी और कलेक्टर कार्यालय का घेराव किया जाएगा। इसमें बड़ी संख्या में छात्रों के शामिल होने की उम्मीद है।

कंधे की चोट से उबरकर स्पर्धा में उतरी थीं

सीनियर नेशनल डाइविंग में इंदौर की पलक ने 3 स्वर्ण सहित 4 पदक जीते

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

गोताखोरी टीवी पर देखने में जितना रोमांचक लगता है, हकीकत में उतना ही जोखिम भरा है। चौथे माले की ऊंचाई (10 मीटर हाई बोर्ड) से जब खिलाड़ी कूदता है, तो शरीर का संतुलन जरा सा भी बिगड़ने पर पानी की मार किसी पत्थर की तरह लगती है।

इंदौर की स्टार डाइवर पलक शर्मा ने इस डर और चोटों को मात देकर तमिलनाडु में आयोजित सीनियर नेशनल एक्वाटिक चैंपियनशिप में इतिहास रच दिया। उन्होंने रेलवे का प्रतिनिधित्व करते हुए एक ही नेशनल स्पर्धा में रिकॉर्ड 4 पदक (3 स्वर्ण और 1 रजत) अपने नाम किए।

सीनियर नेशनल के इतिहास में एक साथ 4 मेडल जीतने वाली वे इंदौर की पहली खिलाड़ी बन गई हैं। पलक के इस शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारतीय रेलवे ने टीम स्पर्धा में भी पहला स्थान हासिल किया।

पलक ने ऋतु की जोड़ी के साथ सिंक्रो स्पर्धाओं में भी अपना दबदबा बनाया

पलक ने ऋतु की जोड़ी के साथ सिंक्रो स्पर्धाओं में भी अपना दबदबा बनाया। दोनों ने दो और स्वर्ण पदक जीते। पलक-ऋतु की जोड़ी ने 3 मीटर स्प्रिंग बोर्ड सिंक्रो में 162.12 अंक और 10 मीटर हाई बोर्ड सिंक्रो में 163.77 अंक हासिल कर जूरी को प्रभावित किया।

राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित हैं पलक डाइविंग के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए साल 2021 में उन्हें प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। साल 2022 में मप्र सरकार ने उन्हें खेल क्षेत्र के प्रतिष्ठित एकलव्य पुरस्कार से नवाजा।

पलक ने बताया, डाइविंग बहुत रिस्की है। 6 महीने पहले ही प्रैक्टिस के दौरान मेरा कंधा चोटिल हो गया था, जिससे उबरने में दो महीने लगे।

सिंक्रो स्पर्धा में भी ऋतु के साथ पदक अपने नाम किए तमिलनाडु में खेली गई इस स्पर्धा में पलक ने 10 मीटर हाई बोर्ड (व्यक्तिगत) में 169.65 अंक हासिल कर पहला स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने 1 मीटर स्प्रिंग बोर्ड स्पर्धा में भी शानदार प्रदर्शन किया और 157.40 अंकों के साथ रजत पदक (सिल्वर) अपने नाम किया।

'बॉयफ्रेंड से बहुत प्यार करती हूं' लिखकर लगाई फांसी

इंदौर में डिजाइनर ने दीवार पर अंग्रेजी में लिखा सुसाइड नोट, मेरे पिता-दादी की गलती

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

इंदौर के एमआईजी थाना क्षेत्र में 20 वर्षीय बीसीए छात्रा और श्रृंडिजाइनर ने किराए के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। कमरे की दीवार पर अंग्रेजी में चॉक से लिखा सुसाइड नोट मिला है। उसने लिखा कि वह अपने बॉयफ्रेंड, मां और भाई से बहुत प्यार करती है।

इसमें छात्रा ने खुद को अपनी मौत के लिए जिम्मेदार बताते हुए पिता और दादी का भी जिक्र किया है। पुलिस का कहना है कि आत्महत्या की वजह अभी स्पष्ट नहीं है और सभी पहलुओं की जांच की जा रही है।

एमआईजी थाना प्रभारी सीबी सिंह के मुताबिक, मूल रूप से राजगढ़ जिले के ब्यावरा की रहने वाली वैष्णवी बनावड़े इंदौर में नेहरू नगर गली नंबर-2 स्थित किराए के कमरे में रहती थी। वह एक निजी कॉलेज में बीसीए द्वितीय वर्ष की छात्रा थी और छप्पन दुकान क्षेत्र के पास श्रृंका प्रोफेशनल कोर्स भी कर रही थी।

शुक्रवार को उसके परिचित युवक ने कई बार फोन किया, लेकिन जवाब नहीं मिला। इसके बाद वह कमरे पर पहुंचा। काफी देर तक दरवाजा खटखटाने के बावजूद अंदर से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। उसने मकान मालिक को सूचना दी। दोनों ने किसी तरह दरवाजा खोला तो वैष्णवी फंदे से लटकी मिली। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची।

घटनास्थल की जांच के दौरान पुलिस को कमरे की दीवार पर चॉक से अंग्रेजी में लिखा सुसाइड नोट मिला। इसमें उसने लिखा मैं मरना चाहती हूं और मैं इसके लिए किसी को ब्लेम नहीं करती हूं। मैं अपने आप को ब्लेम करती हूं क्योंकि मैं इतनी अनवर्थी हूं। मैं अपने बॉयफ्रेंड, मम्मी और भाई से बहुत प्यार करती हूं। ये मेरे पिता और दादी की गलती है। मैं सभी से प्यार करती हूं।

इंदौर के हाईप्रोफाइल ड्रग्स केस में क्राइम ब्रांच की एंट्री

गुजरात कनेक्शन की जांच तेज, नाना पटवारी से दोबारा पूछताछ की तैयारी, एक महिला को भी भेजा नोटिस

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

इंदौर में सामने आए हाई-प्रोफाइल ड्रग्स तस्करी मामले की जांच अब और तेज होती जा रही है। दो दिन पहले कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष जीतू पटवारी के भाई कुलभूषण उर्फ नाना पटवारी से हुई लंबी पूछताछ हुई थी। अब इस मामले में इंदौर क्राइम ब्रांच भी सक्रिय हो गई है।

पुलिस और क्राइम ब्रांच की संयुक्त जांच में ड्रग्स नेटवर्क के तार गुजरात से जुड़े होने के संकेत मिले हैं, जिसके बाद मामले ने नया मोड़ ले लिया है। सूत्रों के अनुसार शुरूआती जांच में ड्रग्स की सप्लाई चेन और वित्तीय लेन-देन का संबंध गुजरात से जुड़ा पाया गया है।

इसके आधार पर क्राइम ब्रांच ने इंदौर और गुजरात के कुछ संदिग्ध व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें पूछताछ के लिए तलब करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि जांच एजेंसियां कुलभूषण उर्फ नाना पटवारी से दोबारा पूछताछ की तैयारी कर रही हैं।

इस बार उनके संपर्क में रही एक महिला को भी नोटिस जारी कर बयान दर्ज कराने के लिए बुलाया गया है। अधिकारियों को उम्मीद है कि दोनों के बयानों से ड्रग्स नेटवर्क के संचालन और उससे जुड़े लोगों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती है। राजेंद्र नगर थाना क्षेत्र में 10.1 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ पकड़े गए आरोपी इरफान उर्फ गोलू चंदेरी और रॉनी भाई ने पूछताछ के दौरान नाना पटवारी का नाम लिया था। इसके बाद पुलिस ने उन्हें हिरासत में लेकर आरोपियों के आमने-सामने बैठाकर कई घंटे तक पूछताछ की थी। प्रारंभिक बयान और तथ्यों के सत्यापन के बाद उन्हें घर जाने की अनुमति दी गई, लेकिन जांच लगातार जारी है।

राजवाड़ा से गूंजा हरियाली का संकल्प

लोगों ने किया एक पेड़ मां के नाम का वादा, पोहा-चाय के साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

पर्यावरण संरक्षण को जन-आंदोलन का स्वरूप देने के उद्देश्य से चलाए जा रहे एक पेड़ में के नाम अभियान को इंदौरवासियों का काफी समर्थन मिल रहा है। शनिवार को राजवाड़ा पर आयोजित विशेष जन-जागरूकता कार्यक्रम में काफी संख्या में नागरिकों ने हस्ताक्षर कर अपनी मां के नाम एक पौधा लगाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों और बच्चों ने भाग लिया। लोगों ने न केवल हस्ताक्षर अभियान में हिस्सा लिया, बल्कि निःशुल्क पोहा और चाय का आनंद लेते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी जन-जन तक पहुंचाया। अभियान के दौरान एमआईसी सदस्य मनीष शर्मा मामा स्वयं लोगों के बीच पहुंचे। उन्होंने नागरिकों को पौधारोपण के लिए प्रेरित किया और अपने खुद पोहा परोसा।। साथ ही सभी से अपनी मां के नाम एक पौधा लगाने और उसकी देखभाल का संकल्प लेने का आग्रह किया।

मंत्री विजयवर्गीय ने भी कार्यक्रम का उत्साहवर्धन किया और लोगों को अपने हाथों से पोहे दिए। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण 21 घंटे तक लगातार चलने वाला संगीतमय जन-जागरूकता अभियान रहा। इस दौरान मनीष शर्मा और राजू शर्मा ने प्रेरणादायक गीत एक अलख जगाउंगा, अपनी मां के नाम एक पेड़ लगाऊंगा प्रस्तुत कर नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया। गीतों के माध्यम से हरियाली बढ़ाने और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ वातावरण बनाने का संदेश दिया गया। राजवाड़ा पर सुबह से देर रात तक लोगों की लंबी कतारें देखने को मिली। हस्ताक्षर अभियान, पौधारोपण संकल्प और पोहा-चाय वितरण ने पूरे आयोजन को जनसहभागिता के उत्सव में बदल दिया। इस अवसर पर मनीष शर्मा ने कहा कि मां जीवन का पहला आधार है और प्रकृति हमारा दूसरा जीवन। यदि प्रत्येक नागरिक अपनी मां के नाम एक पौधा लगाकर उसकी देखभाल का संकल्प ले, तो इंदौर ही नहीं, पूरा प्रदेश हरियाली से आच्छादित हो सकता है। प्रदेशभर में 21 लाख पौधों के रोपण के लक्ष्य के साथ संचालित यह अभियान लगातार जनसमर्थन प्राप्त कर रहा है। राजवाड़ा का यह आयोजन पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सहभागिता और जन-जागरूकता का प्रेरक उदाहरण बनकर सामने आया है।

शंकालु पति ने असिस्टेंट पोस्ट मास्टर पत्नी की चाकुओं से गोदकर हत्या की

ब्रह्मास्त्र ▸▸ इंदौर

एक शंकालु और सनकी पति ने शनिवार सुबह 8 से 8:30 बजे के बीच असिस्टेंट पोस्ट मास्टर पत्नी की चाकू से गोदकर हत्या कर दी। फिर बेटे-बेटी के स्कूल पहुंचा। वहां बेटी प्रेक्षा (14) को एक थैली में पत्नी के जेवर, एटीएम, मोबाइल फोन और स्कूटी की चाबी दी।

बोला हम दोनों अर्जेंट में भोपाल जा रहे हैं। तुम घर की जगह मौसी के घर दो-तीन दिन रहना। छुट्टी होने के बाद बेटी प्रेक्षा भाई अव्यक्त (8) को लेकर कपड़े लेने घर पहुंची तो मां का खून से लथपथ शव देखा। जब पुलिस पहुंची तो आरोपी के मोबाइल भी घर में ही मिले। मायके वालों ने बताया कि शादी के बाद से ही वह हमारी बेटी पर शक करता और पीटता रहता था।

बेटी को बोला था- ऐसे हैवान से तलाक ले ले, वो बोली कभी तो समझेगा

- खंडवा के गणेश तलाई में रहने वाले उर्मिला के पिता सत्यनारायण मालाकार ने बताया कि समाज के सोशल मीडिया ग्रुप पर अखिलेश का बॉयोडाटा आया था। वह भोपाल का रहने वाला था और उर्मिला भी वहीं नौकरी करती थी। इसलिए हमने मर्जी से रिश्ता तय कर दिया। शादी के बाद से ही वह उसे परेशान कर रहा था, लेकिन हमें 10 साल बाद पता चला।
- अखिलेश की हरकतों को देख हमने बेटी से कहा था कि तलाक ले ले सुखी रहेगी, तो वह बोलती थी बच्चे छोटे हैं। कभी तो सुधरेगा। वह हमेशा मेरी बेटी को मारता था। हमने कई बार समझाया तो माफी मांग लेता था। उसकी हरकतों से परेशान होकर उर्मिला ट्रांसफर करवाकर इंदौर आ गई।

संयोगितागंज पुलिस के अनुसार भोपाल के टीला जमालपुरा में रहने वाले अखिलेश सैनी (40) ने पत्नी उर्मिला सैनी (38) की चाकुओं से गोदकर हत्या कर दी। घटना शनिवार सुबह नवरतन बाग के पास पोस्ट ऑफिस की डाक कुंज कॉलोनी की है।

हमेशा मां का फोन चेक करता था बकौल बेटी प्रेक्षा, वो (पिता) हमेशा मेरी मम्मी से लड़ता रहता था। मैंने भी बहुत समझाने की कोशिश की तो उसने मुझे भी कई बार मारा। कल रात को जब मैं बाहर थी तब भी उसने मां से झगड़ा किया था। गुस्से में मां ने खाना नहीं बनाया तो उसने ऑनलाइन चिकन बुलाया।

वो हमेशा मेरी मम्मी पर शक करता था। उन्हें मोबाइल में इंटरनेट भी नहीं चलाने देता था। शनिवार को कभी ड्यूटी लग जाती तो बोलता कि तू जानबूझकर ड्यूटी लगवाती है, ताकि किसी से फोन पर बात कर सके। उसने मां का वॉट्सएप भी हैक कर लिया था, वह हमेशा चेक कर लेता था। यहां मेरी बहन के घर भी अखिलेश ने विवाद किया तो हमने जूनी इंदौर थाने में रिपोर्ट लिखवाई थी। तब दामाद ने पैरों में गिरकर माफी मांगी थी। उर्मिला की बुआ ने बताया कि सगाई के बाद से ही अखिलेश उसे मारता था, लेकिन कभी पता नहीं चला। जब प्रेक्षा बड़ी हुई तो उसने भोपाल वाले घर पर गार्डन के पीछे एक पेड़ पर लिखा था कि अब पापा-मम्मी का झगड़ा हुआ तो मैं कुछ कर लूंगी।

भाजपा नेता बोले-50 हजार दिए, पर सिलेक्शन नहीं हुआ

:खंडवा में कांग्रेस नेता की पत्नी का आंगनवाडी में चयन; कहा-बाबू ने उनसे 3 लाख लिए

ब्रह्मास्त्र ›› खंडवा

खंडवा में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भर्ती प्रक्रिया में धांधली के आरोप लगे हैं। एक महिला अभ्यर्थी ने महिला बाल विकास विभाग के अफसरों पर रिश्वत लेकर मेरिट बदलने की शिकायत की है। उनका आरोप है कि योग्यता और पात्रता के आधार पर मेरिट सूची में उनका नाम पहले स्थान पर था, लेकिन समिति के फैसले के बाद जारी अंतिम सूची में उन्हें चौथे स्थान पर कर दिया गया। उनका यह भी कहना है कि अनुभव के अंक नहीं जोड़े गए।

ग्राम शिवरिया निवासी लक्ष्मी सोनेर ने कलेक्टर और जिला पंचायत सीईओ से शिकायत की है। उनके पति निखिलेश गार्वे भाजपा एससी मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष हैं। वहीं चयनित आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ज्योति जाधव के पति अनिल जाधव यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष हैं। इससे पहले भी भर्ती और नियुक्ति प्रक्रिया के दौरान महिला बाल विकास विभाग के अफसरों पर रिश्वतखोरी के आरोप लग चुके हैं। हालांकि इन आरोपों की न जांच हुई और न ही किसी के खिलाफ कार्रवाई की गई। लक्ष्मी सोनेर के पति और भाजपा नेता निखिलेश गार्वे ने आरोप लगाया कि भर्ती प्रक्रिया में हरसूद परियोजना के सीडीपीओ गोपाल मोरे और बाबू नरेंद्र कनाड़े की मिलीभगत है। उनके जरिए आवेदनों की स्क्रूटनी कर मेरिट तैयार की जाती है और फिर चयन समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। निखिलेश गार्वे ने आरोप लगाया कि भर्ती प्रक्रिया के दौरान रुपए की मांग की जाती है। उनका दावा है कि नौकरी लगाने के बदले उनसे कनाड़े बाबू ने 50 हजार रुपए लिए, जबकि ज्योति जाधव ने 3 लाख रुपए दिए, इसलिए उनका चयन कराया गया। उनका यह भी आरोप है कि पूछने पर कहा गया कि यह सब डीपीओ रत्ना शर्मा ने किया है।

हरसूद ब्लॉक के ग्राम शिवरिया-01 की आवेदिका लक्ष्मी सोनैर ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भर्ती की ऑनलाइन मेरिट सूची पर आपत्ति दर्ज कराई है। उनका आरोप है कि ऑफलाइन प्रारंभिक सूची में उन्हें 60 अंक और पहला स्थान मिला था, लेकिन 18 मार्च 2026 को जारी ऑनलाइन मेरिट सूची में अंक घटाकर 45 कर दिए गए, जिससे उनकी रैंक चौथे स्थान पर पहुंच गई। आवेदिका का दावा है कि उन्होंने आवेदन के साथ बीपीएल कार्ड अपलोड किया था और उनका नाम पात्र हितग्राही सूची में भी दर्ज है। इसके बावजूद ऑनलाइन मेरिट में बीपीएल श्रेणी के निर्धारित 5 अंक नहीं जोड़े गए।

इसके अलावा, उनके पास जिला पंचायत खंडवा द्वारा प्रमाणित 5 वर्ष 5 माह का ग्राम सामाजिक एनीमेटर (श्रअ) का अनुभव है। ऑफलाइन सूची में इस अनुभव के 10 अंक मिले थे, लेकिन ऑनलाइन सूची में इन्हें शून्य कर दिया गया। आवेदिका के अनुसार, यदि बीपीएल के 5 अंक और कायार्नुभव के 10 अंक जोड़े जाते तो उनके कुल 60 अंक बनते और मेरिट सूची में उनका चयन होना तय था। अंक नहीं मिलने से वे पहले स्थान से चौथे स्थान पर पहुंच गईं।

खबर एक नजर...

सरकूला बांध 6 साल में सिर्फ 20% बना:ठेकेदार के पास 80% काम करने अब मात्र 6 सप्ताह बचे

शिवपुरी। पोहरी विधानसभा क्षेत्र की सरकूला मध्यम सिंचाई परियोजना समय सीमा में पूरी नहीं हो पा रही है। 6 साल में बांध का काम सिर्फ 20% ही हो पाया है। बांध का काम पूरा करने के लिए ठेकेदार के पास महज 6 सप्ताह बचे हैं। काम की धीमी रफ्तार के कारण क्षेत्र के किसानों की 41 हजार बीघा से अधिक जमीन रबी सीजन में भी असिंचित रह जाएगी। जानकारी के मुताबिक पोहरी की सरकूला मध्यम सिंचाई परियोजना अक्टूबर 2018 में मंजूर हुई। टेंडर प्रक्रिया के जरिए राजकमल बिल्डर्स, इंदौर को 28 अगस्त 2020 को वर्क ऑर्डर जारी हुआ। 27 फरवरी 2025 तक सिंचाई प्रोजेक्ट का काम पूरा कराना था। लेकिन पुनः संरक्षण, फॉरेस्ट एनओसी, पर्यावरण अनुमति के चलते प्रोजेक्ट के काम में देरी हुई। इस कारण 23 अक्टूबर 2020 से बांध का कार्य प्रारंभ हुआ। लेकिन 1 जुलाई की स्थिति में ठेकेदार बांध का 20% ही बना पाया है। जबकि बांध सहित नहर का कार्य 21 अगस्त 2026 तक पूरा करना है। यानी 6 सप्ताह में 80% बांध बनना किसी भी सूरत में मुमकिन नजर नहीं आ रहा है।

सड़क मांगी, मिली जेल, युवक गिरफ्तार, गांव धरने पर... रोड का काम भी बंद

मुरैना। दिमनी विधानसभा क्षेत्र के जौंहा की गढ़ी में कीचड़ से सनी सड़क के निर्माण की मांग को लेकर अनशन पर बैठे युवक नवनीत तोमर को पुलिस द्वारा रात के अंधेरे में जेल भेजे जाने के बाद गांव में आक्रोश है। पुलिस कार्रवाई के विरोध में शनिवार को सुबह होते ही पूरा गांव सड़क पर उतर आया और धरने पर बैठ गया। नवनीत की पत्नी प्रियंका तोमर ने कहा, मेरा पति कोई अपराधी नहीं है, हम उनकी जमानत नहीं कराएंगे। इधर, प्रशासन द्वारा सड़क निर्माण शुरू करने के दावों की पोल भी चौथे दिन ही खुल गई। मौके पर न गिट्टी गिरी और न ही ठेकेदार काम करने पहुंचा। सड़क निर्माण की मांग को लेकर जौंहा की गढ़ी गांव में चल रहे आंदोलन में अब कांग्रेस भी उतर आई है। कांग्रेस नेताओं ने चेतावनी दी जब तक नवनीत को ससम्मान रिहा नहीं किया जाता और मौके पर सड़क निर्माण शुरू नहीं होता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

गड़बड़ी: 30 लाख रुपए के लोन घोटाले में सीनियर ब्रांच मैनेजर समेत 2 लोगों को 7 साल सजा

ब्रह्मास्त्र ›› भोपाल

बैंक ऑफ इंडिया की मिसरोद शाखा के तत्कालीन सीनियर ब्रांच मैनेजर पियूष चतुर्वेदी और साथी मोहन सिंह सोलंकी को 7 साल की सजा सुनाई है। विशेष न्यायाधीश (सीबीआई) नीलम शुक्ला ने 30 लाख रुपए का फर्जी लोन घोटाला मामले में फैसला सुनाया है।

कोर्ट ने पियूष पर 40 हजार और मोहन पर 20 हजार रुपए का जुमार्ना भी लगाया है। दरअसल आरोपियों ने लोन की राशि को दूसरे खाते में ट्रांसफर कर गबन किया था। मामला 20 अप्रैल 2013 से 3 जनवरी 2015 के बीच का है, जब बैंक ऑफ इंडिया की मिसरोद शाखा में वरिष्ठ शाखा प्रबंधक के पद पर पियूष चतुर्वेदी पदस्थ था। उसने बिचौलिए मोहन सिंह सोलंकी के साथ मिलकर मेसर्स सनी इंटरप्राइजेस के प्रोपराइटर इशविंदर सिंह गोगी के नाम पर 30 लाख रुपए का कैश क्रेडिट लोन स्वीकृत किया।

लोन पास होने के ठीक उसी दिन 21 नवंबर 2013 इशविन्दर सिंह की जानकारी और बिना किसी वैध मैंडेट के स्वीकृत राशि में से 22 लाख रुपए इलाहाबाद बैंक की कोतवाली रोड शाखा में गोल्ड फ्लाय एश फर्म के खाते में ट्रांसफर कर दिए गए।

जांच में सामने आया कि गोल्ड फ्लाय एश खाते का संचालन आरोपी मोहन सिंह सोलंकी ही कर रहा था। इशविंदर को इसकी भनक तब लगी जब उसने अपना अकाउंट स्टेटमेंट निकाला।

तकनीकी खराबी का हवाला देकर निकाले थे 50 हजार रुपए

सीबीआई की जांच में सामने आया कि 30 नवंबर 2013 को मैनेजर पीयूष चतुर्वेदी ने खुद एक विड्रॉल वाउचर भरा। क्लर्क को कहा कि ग्राहक का फोन आया है और वह लेट हो जाएगा। मैनेजर के निर्देश पर क्लर्क ने मेसर्स सनी इंटरप्राइजेस के लोन खाते से 50 हजार रुपए डेबिट कर कैश पीयूष चतुर्वेदी को सौंप दिया। जब इशविंर सिंह ने खाते से पैसे कटने की लिखित और मौखिक शिकायत की, तो मैनेजर इसे तकनीकी खराबी बताते रहे।

जांच में खुलासा हुआ कि गोल्ड फ्लाय एश फर्म कागजों पर रचना तोमर के नाम थी। उन्होंने अमरीश मालवीय के पक्ष में पावर ऑफ अटॉर्नी कर रखी थी। लेकिन, यह व्यवस्था सिर्फ औपचारिक थी। सीबीआई ने मोहन सिंह सोलंकी के घर छापेमारी की, तो वहां से इस खाते के अमरीश मालवीय द्वारा साइन कई ब्लैंक चेक और मूल पावर ऑफ अटॉर्नी बरामद हुई। इससे सिद्ध हुआ कि खाते का असली नियंत्रण और पैसों का उपयोग मोहन सोलंकी ही कर रहा था ।

पीडीएफ खोलते ही मोबाइल हैंग, खाते से निकल गए 96 हजार रुपए

राजधानी में साइबर ठग लगातार नए-नए तरीके अपनाकर लोगों को निशाना बना रहे हैं। कहीं क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने, कहीं कूरियर अपडेट, कहीं रिवॉर्ड प्वाइंट रिडीम कराने तो कहीं इंटरनेशनल ट्रांजेक्शन बंद कराने के नाम पर लोगों से लाखों रुपए की ठगी कर ली गई। पुलिस ने सभी मामलों में अज्ञात आरोपियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। ऐशबाग पुलिस के मुताबिक ओल्ड सुभाष नगर निवासी 60 वर्षीय अरविंद अग्रवाल को 30 जून को अज्ञात नंबर से कॉल आया। कॉलर ने खुद को एसबीआई कस्टमर केयर कर्मचारी बताकर क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने का झांसा दिया। उसने वॉट्सएप पर कार्ड की डिटेल भेजकर सत्यापन कराया और बातचीत में उलझाए रखा। इसी दौरान कार्ड से 50 हजार रुपए का ऑनलाइन ट्रांजेक्शन हो गया। संदेह होने पर अग्रवाल ने चैट बंद की। बैंक से ट्रांजेक्शन की पुष्टि के बाद कार्ड ब्लॉक कराया और साइबर हेल्पलाइन 1930 पर शिकायत दर्ज कराई।

जन्म प्रमाण पत्र बनाने में देरी, रिश्वत का आरोप

ब्रह्मास्त्र ›› खंडवा

मेडिकल कॉलेज सह-जिला अस्पताल में बच्चों के जन्म प्रमाण पत्र बनवाने को लेकर लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। आवेदनों के बाद प्रमाण पत्र मिलने में 8 से 10 दिन लगने का दावा किया जा रहा है। अस्पताल पहुंचे कई लोगों ने आरोप लगाया कि पैसे देने पर काम तुरंत हो जाता है, जबकि सामान्य आवेदकों को लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

अस्पताल में सुबह से ही जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए कतारें लग जाती हैं। कोई बच्चे के नाम में सुधार कराने आता है तो कोई प्रमाण पत्र को डिजिटल कराने के लिए आवेदन देता है। दूर-दराज के गांवों से आए लोग घंटों लाइन में खड़े रहते हैं, फिर भी कई बार उनका काम नहीं हो पाता। सबसे अधिक परेशानी उन परिवारों को हो रही है जिनके बच्चों का स्कूल में प्रवेश जन्म प्रमाण पत्र के अभाव में अटका हुआ है। मजबूरी में लोग रोज काम छोड़कर अस्पताल पहुंच रहे हैं, लेकिन अव्यवस्था और धीमी प्रक्रिया के कारण उन्हें राहत नहीं मिल रही। कतार में खड़े नानकराम वर्मा ने बताया कि वे लगातार चार दिन से लाइन में लग रहे हैं और टोकन मिलने के बाद भी काम नहीं हो पा रहा। उनका आरोप है कि जिन लोगों की सिफारिश या पैसे पहुंच रहे हैं, उनका काम भीतर से ही जल्दी कर दिया जाता है, जबकि आम लोग लाइन में खड़े रह जाते हैं।

कांग्रेस ने दतिया राजघराने के घनश्याम को बनाया प्रत्याशी, बोले- भाजसा से सीधी लड़ाई

ब्रह्मास्त्र ›› भोपाल

दतिया विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस ने पूर्व विधायक और दतिया राजघराने के मुखिया घनश्याम सिंह को उम्मीदवार घोषित किया है। इसकी घोषणा कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने की। घनश्याम सिंह और भाजपा के आशुतोष तिवारी के बीच सीधा मुकाबला होगा।

प्रत्याशी घोषित होने के बाद घनश्याम सिंह ने कहा- उन्होंने चुनाव की पूरी तैयारी कर ली है। कांग्रेस विकास के मुद्दे पर चुनाव लड़ेगी। मुकाबला सीधा कांग्रेस और भाजपा के बीच होगा। कांग्रेस जीतेगी। घनश्याम सिंह का नाम घोषित होते ही समर्थकों में खुशी का माहौल है। वे सड़कों पर पटाखे फोड़कर जश्न मना रहे हैं। दतिया किले पर कांग्रेस कार्यकताओं की भीड़ जमा हो गई है। वे कांग्रेस प्रत्याशी बनने पर बधाई देकर खुशियां मना रहे हैं। दतिया उपचुनाव में भाजपा ने पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा की जगह आशुतोष तिवारी को उम्मीदवार बनाया है। अब कांग्रेस के घनश्याम सिंह और भाजपा के आशुतोष तिवारी के बीच सीधा मुकाबला होगा।

घनश्याम सिंह ने बताया रणनीति यह रहेगी कि हम सब लोग पूरी जोरदार तरीके से चुनाव लड़ेंगे। जनता से वादा करेंगे। हमारी राजनीति विकास की राजनीति होनी चाहिए। जो पुरानी राजनीति थी, वो बहाल होनी चाहिए। सभी समाजों में सद्भावना होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि 80% लोग दूसरे जिलों के बाहर के थे। झांसी, निवाड़ी, टीकमगढ़, शिवपुरी, दतिया, जालौन, भिंड, मुरैना, ग्वालियर के लोग थे। इसलिए उनका शक्ति प्रदर्शन देखने में जो ज्यादा लग रहा था, वो स्थानीय राजनीतिक शक्ति नहीं है।

घनश्याम सिंह ने बताया मुकाबला आमने-सामने का ही होगा, क्योंकि जनता अब जान चुकी है कि ये (तीसरी पार्टियां) तो केवल वोट काटने और भाजपा को जिताने के लिए होती हैं। भाजपा की 'बी टीम' की तरह खड़ी हुई हैं। जनता यह बात अच्छी तरह समझ चुकी है।

नरोत्तम बोले- पार्टी का निर्णय सिर-माथे पर

दतिया उपचुनाव में पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा को टिकट नहीं मिलने पर मचे बवाल के बीच वे भोपाल पहुंचे। यहां उन्होंने कहा कि पार्टी का फैसला उनके सिर-माथे पर है। हंगामा कर रहे समर्थकों को लेकर उन्होंने कहा कि उन्हें मना लिया जाएगा। नरोत्तम मिश्रा ने यह भी कहा कि वे भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी के नामांकन में शामिल होंगे और उनके लिए प्रचार भी करेंगे। हालांकि उनके चेहरे पर वह उत्साह नजर नहीं आया, जिसके लिए वे अक्सर जाने जाते हैं। मीडिया के सवालों का भी उन्होंने कट-टू-कट जवाब दिया।

मंदिर तोड़ने का प्रयास, बजरंग दल ने किया विरोध

ब्रह्मास्त्र ›› खंडवा

अंजनी टॉकीज के पास स्थित शिव मंदिर तोड़ने के प्रयास का बजरंग दल ने विरोध किया है। संगठन के अनुसार शनिवार को सूचना मिली कि एक व्यक्ति मंदिर को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। जिला सह संयोजक शुभम निकुम ने बताया कि उक्त स्थान पर पहले मां कालिका का मंदिर स्थापित था और आरोप है कि संबंधित व्यक्ति ने पहले मां कालिका की प्रतिमा वहां से हटाई थी। श्रद्धालुओं ने विधिवत भगवान शिव की स्थापना कर शिव मंदिर का निर्माण किया। अब फिर से मंदिर को तोड़ने का प्रयास किया।

दुर्गावती टाइगर रिजर्व की बीमार बाघिन वेटरनरी कॉलेज रेफर

जबलपुर। वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व (नौरादेही) से रेस्क्यू की गई करीब डेढ़ साल की बाघिन की हालत गंभीर बनी हुई है। उसे इलाज के लिए जबलपुर स्थित वेटरनरी कॉलेज के स्कूल ऑफ वाइल्ड लाइफ फॉरेंसिक एंड हेल्थ में भर्ती कराया गया है। वन्यजीव चिकित्सकों को आशंका है कि बाघिन जानलेवा कैनाइन डिस्टेंपर वायरस से पीड़ित हो सकती है। बाघिन के पैरों में सूजन है और उसके शरीर के अंदरूनी हिस्सों में भी चोटें हैं। डॉक्टरों ने वायरस की पुष्टि के लिए सैंपल जांच के लिए लैब भेजे हैं।

गाय बचाने की कोशिश में अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराई; तीनों सुरक्षित

ब्रह्मास्त्र ›› कटनी

कटनी के कुठला थाना क्षेत्र के पुरैनी स्थित सब्जी मंडी के पास शनिवार देर रात कार डिवाइडर से टकराकर पलट गई। हादसे में कार में सवार तीन लोग बाल-बाल बच गए और उन्हें कोई गंभीर चोट नहीं आई।

जानकारी के अनुसार, घटना शनिवार रात करीब 10 बजे हुई। चाका की तरफ से कटनी शहर की ओर आ रही तेज रफ्तार कार सड़क पर बैठी गाय को बचाने के प्रयास में अनियंत्रित हो गई। चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया, जिससे कार डिवाइडर से जा टकराई और पलट गई। हादसे के बाद मौके पर शोर सुनकर आसपास के स्थानीय लोग और राहगीर तुरंत मदद के लिए पहुंचे। उन्होंने कार में फंसे तीनों लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। हालांकि, दुर्घटना में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई है।

विशेषरेलयानानां आवृत्तिविस्तारार्थं पश्चिमरेलवे

रेल नं.	इत्यस्मात्	यावत्	चलनदिवसः	विस्तारितः इति
०४१७६ इति	दादर	सुबेदारगंज	मङ्गलवारः	०१.०९.२०२६
०४१७५	सुबेदारगंज	दादर	रविवारं	३०.०८.२०२६
०४१४०	दादर	प्रयागराज	रविवारं	३०.०८.२०२६
०४१३९	प्रयागराज	दादर	शुक्रवारं	२८.०८.२०२६
०९७०६	बान्द्रा टर्मिनस	जयपुर	सोमवारं	१७.०८.२०२६
०९७०५	जयपुर	बान्द्रा टर्मिनस	रविवारं	१६.०८.२०२६
०९७०८	बान्द्रा टर्मिनस	जयपुर	बृहस्पतिवारः	३०.०७.२०२६
०९७०७	जयपुर	बान्द्रा टर्मिनस	बुधवारः	२९.०७.२०२६
०४१२६	बान्द्रा टर्मिनस	सुबेदारगंज	मङ्गलवारः	०१.०९.२०२६
०४१२५	सुबेदारगंज	बान्द्रा टर्मिनस	सोमवारं	३१.०८.२०२६
०२२००	बान्द्रा टर्मिनस	योद्धा झाँसी के लक्ष्मीबाई	शनिवारं	२९.०८.२०२६
०२१९९	योद्धा झाँसी के लक्ष्मीबाई	बान्द्रा टर्मिनस	बृहस्पतिवारः	२७.०८.२०२६
०४१२०	वलसाद	सुबेदारगंज	रविवारं	३०.०८.२०२६
०४११९	सुबेदारगंज	वलसाद	शनिवारं	२९.०८.२०२६
०४१७८	वलसाद	सुबेदारगंज	बुधवारः	२६.०८.२०२६
०४१७७	सुबेदारगंज	वलसाद	मङ्गलवारः	२५.०८.२०२६
०९४४७ इति	अहमदाबाद	पटना	बुधवारः	१५.०७.२०२६
०९४४८	पटना	अहमदाबाद	शुक्रवारं	१७.०७.२०२६
०११०८	उधना	आगरा कैन्ट्	बुधवारः	२६.०८.२०२६
०११०७	आगरा कैन्ट्	उधना	मङ्गलवारः	२५.०८.२०२६
०४१५६	उधना	सुबेदारगंज	मंगलवासरः शुक्रवासरः	०१.०९.२०२६
०४१५५	सुबेदारगंज	उधना	सोमवासरः गुरुवासरः	३१.०८.२०२६
०४१०६	उधना	प्रयागराज	शुक्रवासरः, सोमवासरः	३१.०८.२०२६
०४१०५	प्रयागराज	उधना	गुरुवासरः, रविवासरः	३०.०८.२०२६
०४११२	गांधीग्राम	प्रयागराज	रविवासरः, बुधवासरः	३०.०८.२०२६
०४१११	प्रयागराज	गांधीग्राम	शनिवासरः, मंगलवासरः	२९.०८.२०२६
०११०६	असवा	कानपुर मध्य	मङ्गलवारः	०१.०९.२०२६
०११०५	कानपुर मध्य	असवा	सोमवारं	३१.०८.२०२६
०११०९	असवा	आगरा कैन्ट्	मङ्गलवारः	०१.०९.२०२६
०१११०	आगरा कैन्ट्	असवा	सोमवारं	३१.०८.२०२६

स्थगितस्य, स्थगितसमयस्य, रचनायाः च विषये विस्तृतसूचनार्थं यात्रिकाः कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in इति सञ्चिकां द्रष्टुं शक्नुवन्ति ।

04176, 04140, 01706, 01708, 04126, 02200, 04120, 04178, 01447, 01108, 04156, 04106, 04112, 01106, 01101 इति रेलसङ्ख्यानां विस्तारितानां रनस्य बुकिंग् करणं भविष्यति आरभते 12.07.2026 तः सर्वेषु पीआरएस काउण्टरेषु तथा च IRCTC जालपुटे। उपर्युक्तानि रेलयानानि विशेषभाडेषु विशेषयानरूपेण प्रचलन्ति।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
अस्माकं इव facebook.com/WesternRly
तथा X.com/WestemRly
अनुशीलनं Instagram.com/WesternRly
अस्मान् उपरि https://www.youtube.com/@पश्चिमार्ली
https://bit.ly/Westernपश्चिम रेलवेअधिकारी...

सर्वेषां आरक्षिततटिकटानां कृते मूलपरिचयपत्रं वहन्तु

मप्र में कोटे की 25% बारिश, जून में पिछड़ा, जुलाई में बढ़ा आंकड़ा; देवास अव्वल, आलीराजपुर सबसे पीछे

ब्रह्मास्त्र ›› भोपाल

मध्य प्रदेश में अबकी बार मानसून 9 दिन की देरी 24 जून को पहुंचा और अगले 9 दिन में ही पूरे प्रदेश को कवर कर लिया। लेट आने से मानसूनी बारिश भी कम हुई। इस वजह से जून में बारिश के आंकड़ा में 30 प्रतिशत तक की गिरावट देखी गई थी। हालांकि, जुलाई में मानसून ने कमाल किया और लगातार नौ दिन तक भारी बारिश का दौर रहा। इससे आंकड़ा प्लस में 8% पर आ गया है।

मौसम केंद्र भोपाल की माने तो प्रदेश में औसत 9.4 इंच बारिश हो चुकी है। अब तक 8.7 इंच पानी गिरना था। इस हिसाब से 8 प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई है। यानी, जुलाई की शुरूआत में ही प्रदेश में कोटे की 25 प्रतिशत बारिश हो चुकी है। फिलहाल तेज बारिश का दौर थम गया है। नया सिस्टम अगले सप्ताह से शुरू हो जाएगा।

मालवा-निमाड़ सबसे बेहतर अबकी बार पश्चिमी हिस्से में बारिश की सबसे अच्छी स्थिति है। खासकर मालवा-निमाड़ यानी, इंदौर-उज्जैन संभाग के जिलों में अच्छा पानी बरसा है। देवास में सबसे ज्यादा 17.9 इंच बारिश हुई है, जो कोटे की 50 प्रतिशत से ज्यादा है। वहीं, आलीराजपुर में सिर्फ 2.3 इंच बारिश ही हुई है। यानी, कोटे की करीब 7 प्रतिशत बारिश दर्ज की गई है।

इन जिलों की अच्छी-बुरी स्थिति

कम बारिश वाले जिले- अनूपपुर, बालाघाट, डिंडौरी, जबलपुर, कटनी, मैहर, मंडला, मऊगंज, नरसिंहपुर, रीवा, सागर, सतना, शहडोल, सीधी, सिंगरौली, टीकमगढ़, उमरिया, आलीराजपुर, दतिया, धार, झाबुआ, मुरैना, नर्मदापुरम, रायसेन और शिवपुरी।

ज्यादा बारिश वाले जिले- आगर-मालवा, अशोकनगर, बड़वानी, बैतूल, भिंड, भोपाल, बुरहानपुर, देवास, गुना, ग्वालियर, हरदा, इंदौर, खंडवा, खरगोन, मंदसौर, नीमच, राजगढ़, रतलाम, सीहोर, शाजापुर, श्योपुर, उज्जैन, विदिशा, छतरपुर, छिंदवाड़ा, दमोह, निवाड़ी, पांढुर्णा, पन्ना और सिवनी।

अब तक हुई बारिश की वजह से कई डैम में पानी जमा हो रहा है। हालांकि,

अभी ओवरफ्लो जैसी स्थिति नहीं है। अगस्त में ही डैम ओवरफ्लो होंगे। दूसरी ओर, सीहोर से निकली कोलांस नदी के उफान पर होने से भोपाल के बड़ा तालाब में पानी जमा हो रहा है। केरवा-कलियासोत डैम में भी पानी आया है।

12 इंच से ज्यादा : भोपाल, सीहोर, इंदौर, बुरहानपुर, देवास, आगर-मालवा और हरदा।

10 से 12 इंच तक : राजगढ़, खंडवा, खरगोन, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, डिंडौरी, गुना, दमोह, उज्जैन, मंदसौर, नीमच और बैतूल।

6 से 10 इंच तक : रायसेन, विदिशा, धार, झाबुआ, बड़वानी, जबलपुर, कटनी, नरसिंहपुर, मंडला, ग्वालियर, शिवपुरी, अशोकनगर, सागर, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, रतलाम, शाजापुर, भिंड, श्योपुर, सीधी, सतना, नर्मदापुरम, शहडोल, उमरिया और अनूपपुर। मध्यप्रदेश में कैसा रहेगा यह सप्ताह मौसम एक्सपर्ट शैलेंद्र कुमार नायक ने बताया कि जुलाई में बारिश के अच्छे सिस्टम एक्टिव रहे। इस वजह से आंकड़े में भी बढ़ोतरी देखने को मिली है।

पंजाबी एक्टर और सिंगर दिलजीत दोसांझ की फिल्म सतलुज पूरी तरह बैन

पंजाबी एक्टर और सिंगर दिलजीत दोसांझ की फिल्म सतलुज अब पूरी तरह बैन हो गई है। इसे डळळ प्लेटफॉर्म `एए5 की ग्लोबल कैटेगरी से भी हटा दिया गया है। इस फिल्म को अब विदेश में भी नहीं देखा जा सकेगा। इसी के साथ फिल्म के कंटेंट की जांच के लिए गठित केंद्रीय समिति ने भी सिफारिश कर दी है कि फिल्म को बैन ही रहने दिया जाए। क्योंकि, फिल्म भारत की संप्रभुता और अखंडता के खिलाफ है। सरकारी सूत्रों से हवाले से यह जानकारी शनिवार को न्यूज एजेंसी ढळक ने दी।

सूत्रों के अनुसार, समिति ने इस बात पर जोर दिया कि क्ळ अधिनियम की धारा 69अ के तहत फिल्म पर प्रतिबंध लगाना उचित था। इसमें पाया गया कि फिल्म की कहानी संतुलित नहीं है, क्योंकि यह उग्रवादियों के कृत्यों को छिपाती है। जबकि, उग्रवाद के दौरान पंजाब में सुरक्षा बलों की ओर से की गई ज्यादतियों को उजागर करती है। यह फिल्म मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालड़ा के जीवन को दशार्ती है, जिन्होंने 1984 और 1994 के बीच पंजाब में हजारों अज्ञात शवों के दाह संस्कार की जांच की थी। 1995 में पंजाब पुलिस ने उनका अपहरण कर हत्या कर दी थी। सुरक्षा संबंधी चिंताओं का हवाला देते हुए सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने 3 जुलाई को रिलीज होने के 2 दिन बाद ही इस फिल्म को भारत में `एए5 से हटा दिया था। इसके बाद मंत्रालय ने फिल्म की विस्तृत जांच के लिए सूचना प्रौद्योगिकी नियम 2021 के तहत एक अंतर-विभागीय समिति (आईडीसी) का गठन किया था। उसी समिति ने इसे बैन रखने की सिफारिश की है।

इस फिल्म में ऐसा क्या है, जिससे इसे बैन किया गया?

यह फिल्म प्रसिद्ध मानवाधिकार कार्यकर्ता जसवंत सिंह खालड़ा के जीवन और संघर्ष पर आधारित है। फिल्म में खालड़ा का रोल दिलजीत दोसांझ ने निभाया है। इसमें खालड़ा द्वारा 1980 और 1990 के दशक में पंजाब में उग्रवाद के दौर में पुलिस की ओर से लावारिस बताकर जलाए गए सिखों के शवों की खोज और उनके दस्तावेजीकरण की कहानी को दशार्या गया है। फिल्म दिखाती है कि खालड़ा ने अमृतसर और तरनतारन के श्मशान घाटों से नगर निगम के रिकॉर्ड हासिल किए, जिससे साबित हुआ कि पुलिस ने हजारों युवाओं को अवैध हिरासत में लेकर मार डाला। इस दौरान साहस दिखाकर राज्य के सिस्टम के सामने खालड़ा खड़े रहे। दुनिया के सामने सच लाने के बाद सितंबर 1995 में पंजाब पुलिस ने खालड़ा की भी हत्या कर दी।

फिल्म की किन चीजों पर विवाद हुआ?

फिल्म सीन्स का देश विरोध में इस्तेमाल: केंद्र सरकार की उच्च स्तरीय समीक्षा समिति और सरकारी सूत्रों के अनुसार, यह फिल्म भारत की संप्रभुता और अखंडता के खिलाफ जाती है। सरकार का मानना है कि फिल्म के कुछ हिस्सों का इस्तेमाल देश विरोधी ताकतों द्वारा किया जा सकता है।
नैरेटिव संतुलित नहीं: सरकारी समिति ने अपनी समीक्षा में पाया कि फिल्म का नैरेटिव संतुलित नहीं है।

आमिर खान सिलक्यारा टनल हादसे पर बनाएंगे फिल्म

आमिर खान की नई फिल्म 'सिलक्यारा 41' की स्क्रिप्ट ऑस्ट्रेलिया में लिखी जा चुकी है। आमिर खान ने एक दिन पहले 2023 में उत्तरकाशी की सिलक्यारा-बड़कोट सुरंग में 17 दिनों तक फंसे 41 मजदूरों के रेस्क्यू ऑपरेशन पर फिल्म बनाने की घोषणा की थी। फिल्म का निर्देशन कबीर खान करेंगे। शुरूआती प्री-प्रोडक्शन का काम ऑस्ट्रेलिया में होगा। फिल्म का निर्माण आमिर खान प्रोडक्शंस, ऑस्ट्रेलिया की माइंड ब्लोइंग फिल्म्स और कबीर खान फिल्म्स मिलकर करेंगे।

आमिर खान ने 5 जुलाई को अपनी गर्लफ्रेंड गौरी स्प्रैट से शादी की। शादी के बाद हनीमून के लिए आमिर खान ऑस्ट्रेलिया में हैं। आमिर खान के बेटे आजाद और गौरी स्प्रैट के बेटे क्विन भी उनके साथ हैं। इसी दौरान भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच एक अहम सिनेमाई सहयोग के तहत आमिर खान प्रोडक्शंस ने मेलबर्न स्थित प्रोडक्शन हाउस माइंड ब्लोइंग फिल्म्स के साथ मिलकर 'सिलक्यारा 41' बनाने की घोषणा की है। मेलबर्न के इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न ने शुक्रवार को अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर फिल्म की आधिकारिक घोषणा की।

'मुझे अपना घर पब्लिक टॉयलेट लगता था', कॉमेडियन राजीव ठाकुर ने बताया- एक कमरे में गुजरा बचपन

कॉमेडियन राजीव ठाकुर ने हाल ही में बताया कि उनका परिवार एक कमरे के घर में रहता था, जहां बेडरूम, किचन और बाथरूम, सब कुछ उसी कमरे में था। 1984 के दंगों में उनके पिता की फैक्ट्री बर्बाद हो गई थी, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी।

वैभव मुंजाल के पॉडकास्ट में राजीव अपने शुरूआती दिनों को याद करते हुए इमोशनल हो गए। उन्होंने कहा कि वह अपनी जिंदगी के उस दौर के बारे में ज्यादा बात करना पसंद नहीं करते क्योंकि उन दिनों की यादें आज भी उन्हें दर्द देती हैं।

उन्होंने कहा, मेरा सफर ऐसे हालात में शुरू हुआ, जिन्हें मैं याद भी नहीं करना चाहता। अगर आज मैं लोगों को इसके बारे में बताऊं तो उन्हें यह मनगढ़ंत लग सकता है। कई लोग कहते हैं कि अपने दर्द को स्टैंड-अप कॉमेडी में बदल दो। मैं कभी-कभी ऐसा करता हूं, लेकिन उन जोक्स को सुनाते समय भी दर्द इतना असली होता है कि मैं बैकस्टेज जाकर रो पड़ता हूं।

पूरा परिवार एक कमरे में रहता था

राजीव ने बताया कि उनके माता-पिता की शादी के बाद परिवार की परिस्थितियां पूरी तरह बदल गई थीं। उनके मुताबिक, पिता को पुश्तैनी घर छोड़ना पड़ा और पूरा परिवार एक कमरे के मकान में रहने लगा। उन्होंने आगे कहा, ह्यवही एक कमरा आपका बाथरूम है। वही कमरा किचन है। वही ड्राइंग रूम है। वही बेडरूम है। उस घर में तीन भाई-बहन हुए हैं। आप सोचो कि बाथरूम भी वही है, बेडरूम भी वही है, किचन भी वही है, तो जब कोई अंदर नहा रहा होता था या कुछ भी कर रहा होता था, तब बाकी चार लोग घर के बाहर बैठे होते थे। मुझे अपना घर पब्लिक टॉयलेट लगता था। सिर्फ 2 रुपए नहीं मिल रहे थे बाहर बैठने के ह्न

दंगों में पिता की फैक्ट्री बर्बाद हुई थी

राजीव ने यह भी बताया कि अमृतसर में उनके पिता की धागे की फैक्ट्री थी, जो 1984 के दंगों के दौरान बर्बाद हो गई। इसके बाद पिता बेरोजगार हो गए और परिवार के सामने आर्थिक स्थिति खराब हो गई। उन्होंने कहा कि कई बार किराया देना भी मुश्किल हो जाता था।

राजीव ने अपने बचपन की परिस्थितियों का जिक्र करते हुए बताया कि घर में केवल 40 वॉट का एक बल्ब था। उन्होंने कहा कि उन्हें सफेद रोशनी देखने की इच्छा होती थी क्योंकि उनके घर में ट्यूबलाइट नहीं थी। उन्होंने यह भी बताया कि मकान मालिक रात 9 बजे बिजली बंद कर देता था, जिसके बाद परिवार या तो सो जाता था या मिट्टी के तेल के दीये की रोशनी में समय बिताता था। राजीव ठाकुर ने मुंबई आने से पहले अमृतसर में कपिल शर्मा और चंदन प्रभाकर के साथ अपने कॉमेडी सफर की शुरूआत की थी। उन्होंने साल 2007 में 'द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज' (सीजन 3) में भाग लिया था। इस सीजन के विनर कपिल शर्मा बने थे। राजीव ठाकुर ने 'कॉमेडी सर्कस' और 'सजन रे झूठ मत बोलो' जैसे कई अन्य टेलीविजन शोज में काम किया।

हरियाणवी गाने भोला-भोली की रील पर विवाद

हरियाणवी म्यूजिक इंडस्ट्री के कलाकार पूजा हुड्डा और प्रदीप बूरा का नया गाना 'भोला भोली' रिलीज होते ही विवादों में घिर गया है। हरिद्वार की हर की पौड़ी पर शूट की गई एक रील को लेकर सोशल मीडिया पर दोनों को जमकर ट्रोल किया जा रहा है।
रील में गंगा नदी में प्रदीप बूरा अपनी पत्नी पूजा हुड्डा को गोद में उठाए नजर आ रहे हैं। बैकग्राउंड में गाना बज रहा है, 'एक घाट पै भोली खड़ी अर एक घाट पै भोला, अरदास करै मां गंगा तै म्हारा मेल करा दे तौला।' दोनों के भीगे कपड़ों और धार्मिक स्थल पर फिल्माए गए इस दृश्य पर कुछ लोगों ने आपत्ति जताते हुए इसे धार्मिक आस्था और हर की पौड़ी की गरिमा के खिलाफ बताया है। एक यूजर ने लिखा कि इन पर भोले बाबा नहीं, इमरान हाशमी सूट करेगा। विवाद बढ़ने के बाद प्रदीप बूरा ने दैनिक भास्कर से बातचीत में अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ पति-पत्नी के प्रेम पर आधारित म्यूजिक वीडियो का हिस्सा है और इसमें कुछ भी अश्लील नहीं है।

जासूस बनिए....अंतर ढूंढो...

रंग भरकर चित्र बनाओ

जोक्स

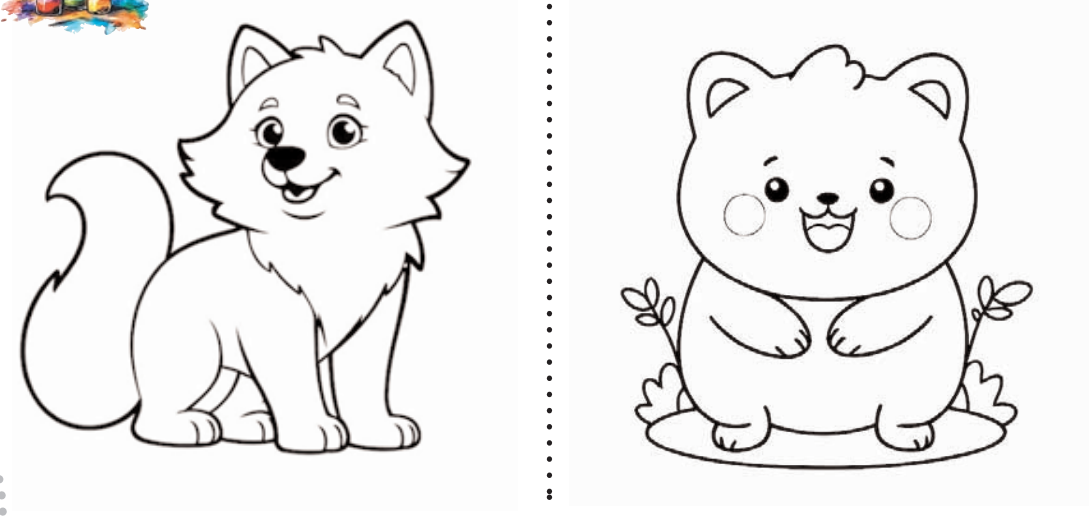

पिता (बेटे पर गुस्सा करते हुए) - एक काम ढंग से नहीं होता तुझसे।
तुम्हें पुदीना लाने के लिए कहा था और तुम धनिया ले आए...
तुझ जैसे बेवकूफ को तो घर से निकाल देना चाहिए...!
बेटा - पापा चलो इकट्ठे ही चलते हैं...
पिता - क्यों...?
बेटा - क्योंकि मम्मी कह रही थी कि ये मेथी है...!!!
00000000000

संता - सुबह-सुबह पड़ोसन बोल रही थी कि मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं...
बंता - तो फिर तुमने क्या किया...?
संता - मैंने उसे चूहे मारने की दवा खिला दी...
दो घंटे से सो रही है,
थैंक्यू भी नहीं बोला...!!!
00000000000

वर्ग पहेली

वर्ग पहेली

बाएं से दाएं

1. अचंभा, आश्चर्य-4
3. अच्छी रुचि, कलात्मक रुचि-3
6. पिता के छोटे भाई, काका-2
7. माह, मास-3
9. धावक (अंग्रेजी-3)
11. नया जीवन, उद्धार होना-5
12. लक्ष्मी, धन की देवी-3
15. बुरी आदत-2
16. पैर, पांव-2
18. देवमुनि, देवर्षि-3
20. शिकायत करना-5
22. रनिवास-3
24. बेकार, आवारा-3
26. छोटा टुकड़ा-2
27. अभिनय, कथा मंचन-3
28. सुगंध फैलाना-4

ऊपर से नीचे

1. सहसा, अकस्मात-4
2. एक प्रकार की शराब-2
3. प्रतिभाशाली-3
5. मननशील-5
6. चतुर्थ-2
8. नाव खेना-2,3
10. पासे फेंककर भविष्य जानने की विद्या-3
13. पैर मारना-5
14. मन की इच्छा-5
17. प्रकार-3
19. टूटना, बिखरना-4
21. पराजित होना, हारना-3
23. चालीस किलो के वजन को यह भी कहते हैं-2
25. पथ, रास्ता, मार्ग-2

माथा पच्ची

20		45		2		20	=	47
	■		■		■		■	
64		55		47		35	=	21
	■		■		■		■	
75		56		60		7	=	72
	■		■		■		■	
50		2		2		20	=	7
=	■	=	■	=	■	=	■	=
59		22		36		42	=	

संकेत

खाली जगहों में आपको केवल (+), (-), (x) व (÷) के निशान लगाने हैं, जिनका उत्तर (=) पूर्णत: मेल खाता हो.

शब्दों का जाल

गं	त	ब	द्री	ना	थ	य	ऋ	ज	पे	यी
द	गा	ल	प्रे	व	जी	म	षि	ह	कां	गं
वि	स	की	वै	को	ह	त	के	ल	रा	गो
के	स	स	क	ष्णो	वा	ज	श	ह	श	त्री
दा	आ	र	ज	स	दे	ना	तू	रि	इ	प
र	ल	ला	र	द्वि	म	वी	ती	द्वा	घ	रिं
ना	व	का	शी	प	वा	ज	र	र	ना	थ
थ	वा	ई	द	ब	ऊं	हू	ए	ब	सि	नी
ह	ल	अ	म	र	ना	थ	ग	क्षी	क	र
गों	ल	प	लि	जी	शी	ला	कौ	ल	द	थि
वा	रा	ण	सी	क्षी	ढि	त	व	प	म	र

शब्दजाल में दस धार्मिक स्थलों के नाम ढूंढ़िए. नाम ऊपर से नीचे व तिरछे हो सकते हैं.

हरिद्वार, गंगोत्री, वैष्णोदेवी, बद्रीनाथ, नासिक, केदारनाथ, अमरनाथ, ऋषिकेष, काशी, वाराणसी

अष्टयोग

1		5		3		2
	32	7	32		30	
3		4	6			7
	22		37	7	39	
4		2			1	5
	34		34	5	28	
7		6	3		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक लिखना अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

माथा पच्ची का हल

33	+	3	-	24	x	3	=	36
-	■	x	■	+	■	x	■	+
25	-	10	+	41	+	8	=	64
x	■	+	■	+	■	+	■	+
5	x	2	+	1	-	10	=	1
-	■	-	■	-	■	-	■	-
35	+	10	-	29	+	15	=	31
=	■	=	■	=	■	=	■	=
5	-	5	+	36	-	19	=	

अष्टयोग का हल

2	3	4	5	6	7	1
6	28	1	36	2	30	4
3	4	5	6	7	1	2
7	36	2	37	3	25	6
4	5	6	7	1	2	3
5	33	7	37	4	33	5
1	2	3	4	5	6	7

शब्दजाल का हल

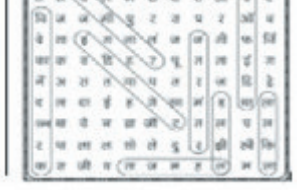

सूडोकु नवताल-

* * * * * कठिनतम

			4		6			
					2	7		
	6	8				9		
5	3							6
				6				
7							9	2
		9				8	5	
		2	1					
			3		4			

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल ! का हल

2	9	7	1	3	6	4	8	5
3	1	6	5	8	4	2	9	7
5	4	8	7	9	2	6	3	1
9	2	1	4	7	3	8	5	6
7	8	3	6	1	5	9	2	4
4	6	5	9	2	8	1	7	3
1	7	4	2	5	9	3	6	8
6	3	2	8	4	7	5	1	9
8	5	9	3	6	1	7	4	2

पंजाब कांग्रेस में वड़िंग-चन्नी की लड़ाई, पावरफुल दिल्ली हुई, भूपेश बघेल नए पावर सेंटर

पंजाब कांग्रेस में पिछले 5 दिनों तक चले सियासी घटनाक्रम का सबसे बड़ा नतीजा न तो राजा वड़िंग की जीत है और न ही चरणजीत सिंह चन्नी की हार। असली बदलाव यह है कि पार्टी के भीतर फैसलों का केंद्र पहले से ज्यादा दिल्ली हो गया है।

चन्नी खेमे ने प्रदेश अध्यक्ष बदलने की मांग रखी, वड़िंग अपने पद पर कायम रहे, लेकिन अंतिम फैसला किसी गुट ने नहीं, बल्कि हाईकमान ने लिया। पंजाब प्रभारी भूपेश बघेल ने दोनों पक्षों की बातें सुनकर साफ कर दिया कि सभी नेताओं की राय दिल्ली तक जाएगी और टिकट जीतने की क्षमता के आधार पर तय होंगे।

साथ ही यह भी साफ हो गया कि पंजाब कांग्रेस के नेतृत्व में कोई बदलाव नहीं होगा। राजनीतिक तौर पर देखा जाए तो इस पूरे घटनाक्रम ने हाईकमान की भूमिका और मजबूत कर दी है। जबकि, पंजाब के नेताओं की अगली राजनीतिक लड़ाई अब दिल्ली में प्रभाव बनाने की होगी।

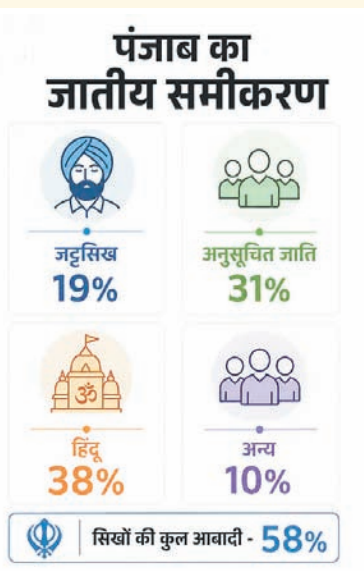

वड़िंग को क्या मिला: कुर्सी बची, लेकिन परीक्षा अभी बाकी

पिछले एक सप्ताह से प्रदेश अध्यक्ष बदलने की मांग सबसे बड़ा राजनीतिक मुद्दा बनी रही। इसके बावजूद हाईकमान ने 23 जिला अध्यक्ष राजा वड़िंग के गुट के होने की वजह से नेतृत्व परिवर्तन से इनकार कर दिया। इससे राजा वड़िंग को तत्काल राहत मिली और उनका संगठनात्मक अधिकार बरकरार रहा।

हालांकि, इस विवाद ने यह भी दिखा दिया कि पार्टी के भीतर उनके नेतृत्व को लेकर सवाल मौजूद हैं। अब उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती संगठन को एकजुट रखना और यह साबित करना होगी कि मौजूदा नेतृत्व में कांग्रेस 2027 का चुनाव मजबूती से लड़ सकती है।

चन्नी को क्या मिला: बात सुनी गई, राजनीतिक वजन भी दिखा

चरणजीत सिंह चन्नी नेतृत्व परिवर्तन नहीं करा सके, लेकिन यह जरूर साबित कर दिया कि उन्हें नजरअंदाज करना कांग्रेस के लिए आसान नहीं है। उनकी नाराजगी के बाद अलग बैठक हुई, उनके तर्क सुने गए और प्रभारी ने भरोसा दिया कि पूरी रिपोर्ट हाईकमान तक जाएगी।

इससे यह संदेश गया कि पंजाब कांग्रेस में चन्नी अब भी सबसे प्रभावशाली नेताओं में हैं। खासकर, करीब 32% दलित वोट बैंक को कांग्रेस नाराज नहीं करना चाहती। हालांकि, चन्नी को भी यह स्पष्ट संकेत मिला कि केवल राजनीतिक दबाव से संगठनात्मक फैसले नहीं बदलेंगे।

इस पूरे विवाद का सबसे बड़ा राजनीतिक लाभ केंद्रीय नेतृत्व को मिला। एक तरफ वड़िंग अपने समर्थकों के साथ थे, दूसरी तरफ चन्नी और रंधावा नेतृत्व परिवर्तन की मांग कर रहे थे। लेकिन, अंतिम फैसला न चंडीगढ़ में हुआ और न किसी गुट के दबाव में। सभी पक्षों को अपनी बात हाईकमान तक पहुंचानी पड़ी। इससे साफ संकेत गया कि पंजाब कांग्रेस में संगठन, टिकट और बड़े राजनीतिक फैसलों की अंतिम चाभी अब भी दिल्ली के पास ही है। राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक, इस घटनाक्रम ने केंद्रीय नेतृत्व की पकड़ और मजबूत कर दी है।

पंजाब कांग्रेस की कलह, कब-क्या हुआ?

1 जुलाई: कांग्रेस हाईकमान ने नई संगठनात्मक सूची जारी की। वड़िंग प्रधान, जबकि चन्नी कैंपेन कमेटी चेयरमैन बनाए।

2 जुलाई: चन्नी खेमे ने नाराजगी जताई। समर्थकों ने चन्नी को PCC चीफ बनाने की मांग की।

3 जुलाई: चन्नी ने समर्थकों संग मोहाली आवास पर मीटिंग की। इसमें वड़िंग को पद से हटाने की मांग दोहराई गई।

4 जुलाई: प्रदेश प्रधान राजा वड़िंग भी ग्राउंड पर उतरे और अपने समर्थक नेताओं से मुलाकात की।

5 जुलाई: कांग्रेस हाईकमान ने पंजाब प्रभारी भूपेश बघेल का 5 दिन का चंडीगढ़ दौरा तय किया।

6 जुलाई: प्रभारी भूपेश बघेल चंडीगढ़ पहुंचे। चन्नी गुट ने अलग से मीटिंग की। सांसद सुखजिंदर रंधावा भी नजर आए।

7 जुलाई: चंडीगढ़ स्थित कांग्रेस भवन में भूपेश बघेल ने बैठक की। चन्नी खेमे ने दूरी बनाई।

8 जुलाई: भूपेश बघेल ने स्पष्ट किया कि वड़िंग ही प्रधान बने रहेंगे। चन्नी ने कहा कि यह राहुल गांधी तय करेंगे।

9 जुलाई: प्रभारी भूपेश बघेल ने पूर्व CM राजिंदर कौर भट्टल और पूर्व मंत्री ब्रह्म महिंद्रा से मुलाकात की। चन्नी गुट ने मीटिंग कर बघेल से मुलाकात का फैसला किया।

10 जुलाई: सुबह चन्नी गुट के साथ भूपेश बघेल की मीटिंग टली। शाम को चन्नी समेत 3 नेताओं के साथ बघेल की मीटिंग फिक्स हुई।

11 जुलाई: चन्नी गुट की बघेल के साथ मीटिंग हुई। सभी ने राजा वड़िंग को लेकर कहा कि कंप्रोमाइज्ड लीडर नहीं चाहिए।

भूपेश बघेल नए पावर सेंटर क्यों बने?

5 दिनों के पूरे घटनाक्रम में सबसे सक्रिय भूमिका पंजाब प्रभारी भूपेश बघेल की रही। उन्होंने पहले नेताओं से अलग-अलग बातचीत की। फिर असंतुष्ट खेमे की बैठक की और अंत में दोनों पक्षों को एक संदेश दिया कि अंतिम रिपोर्ट हाईकमान के पास जाएगी। टिकट वितरण, नेताओं के प्रदर्शन, संगठन की स्थिति और चुनावी तैयारियों का फीडबैक अब उनके जरिए ही दिल्ली पहुंचेगा। ऐसे में पंजाब कांग्रेस में फिलहाल नेताओं और हाईकमान के बीच सबसे महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में उनकी भूमिका उभरती दिखाई दे रही है।

अब नेताओं की दिल्ली दौड़ क्यों बढ़ेगी?

बैठक के बाद यह लगभग साफ हो गया कि 2027 की तैयारी में सबसे अहम फैसले, जैसे; टिकट, संगठनात्मक बदलाव और चुनावी रणनीति, दिल्ली में तय होंगे। ऐसे में विधायक, पूर्व विधायक, जिला अध्यक्ष, टिकट के दावेदार और विभिन्न गुटों के नेता अपनी राजनीतिक स्वीकार्यता का संदेश पहले प्रभारी और फिर हाईकमान तक पहुंचाने की कोशिश करेंगे।

टाटा के सिंगूर छोड़ने के बाद हजारों परिवार आर्थिक और मानसिक संकट से गुजरते रहे

बंगाल में 20 साल बाद टाटा की वापसी संभव, सीएम सुवेंदु खुद मामले को देख रहे; ममता के आंदोलन से बंद हुआ था प्लांट

ब्रह्मास्त्र ▸▸ पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल के सिंगूर में करीब दो दशक पहले टाटा की नैनो परियोजना को लेकर शुरू हुआ विवाद एक बार फिर सुर्खियों में है। राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद टाटा समूह की सिंगूर में वापसी को लेकर चर्चा तेज हो रही है।

राज्य के उद्योग मंत्री तापस रॉय ने कहा कि टाटा के साथ शुरूआती स्तर पर बातचीत चल रही है। अगर टाटा ग्रुप लौटने को तैयार होता है तो सरकार वहां किसी दूसरी कंपनी को नहीं लाएगी। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी खुद मामले की निगरानी कर रहे हैं।

हालांकि, जिन किसानों ने 2006 में नैनो के लिए अपनी जमीन दी थी, उनके लिए यह अधूरा सपना है। टाटा के सिंगूर छोड़ने के बाद हजारों परिवार आर्थिक और मानसिक संकट से गुजरते रहे। करीब 3,600 ऐसे परिवारों को आज भी सरकार हर महीने दो हजार रुपये और 16 किलो चावल देती है, लेकिन कई परिवार अब भी उस सदमे से उबर नहीं पाए हैं। 75 साल की अंगूर दास बताती हैं कि उनके पति ने छह बीघा जमीन परियोजना के लिए दी थी। टाटा के जाने के बाद वे गहरे सदमे में चले गए और वर्ष 2019 में उनका निधन हो गया। अंगूर दास कहती हैं कि यदि टाटा दोबारा लौटती है तो वे अपनी बची हुई जमीन भी देने को तैयार हैं। जब सिंगूर आंदोलन चल रहा था तब अनिद्य दास महज 12 साल के थे। आज 32 साल के अनिद्य को रोजगार के लिए कोलकाता जाना पड़ता है। उनका कहना है कि यदि फैक्ट्री लग गई होती तो उन्हें रोज शहर जाकर नौकरी नहीं करनी पड़ती। उनके पिता ने भी जमीन दी थी, लेकिन आज वह जमीन भी खेती के योग्य नहीं बची है।

20 साल में 15 गुना बढ़ी जमीन की कीमत

भूमि अधिग्रहण के समर्थन में बनी सिंगूर शिल्प विकास समिति के अध्यक्ष डॉ. उदयन दास का कहना है कि वर्ष 2006 के बाद से जमीन की कीमतों में लगभग 15 गुना वृद्धि हो चुकी है। उनके मुताबिक सड़क किनारे की जमीन, जिसकी कीमत उस समय करीब तीन लाख रुपये प्रति बीघा थी, अब एक करोड़ रुपये प्रति बीघा तक पहुंच गई है।

ऐसे में यदि टाटा दोबारा लौटती है तो केवल मुआवजे पर ही 1,300 करोड़ रुपये से अधिक खर्च करना पड़ सकता है। यही वजह है कि उनकी नजर में टाटा की वापसी आसान नहीं होगी।

वर्तमान में सिंगूर की वह 997 एकड़ जमीन, जहां कभी नैनो परियोजना शुरू हुई थी, बड़े हिस्से में झाड़ियों से ढकी पड़ी है। कभी यह इलाका पश्चिम बंगाल की सबसे उपजाऊ कृषि भूमि माना जाता था, जहां धान, आलू और अन्य फसलें होती थीं। लेकिन परियोजना रुकने के बाद खेती भी प्रभावित हुई और बड़ी संख्या में किसान रोजगार की तलाश में दूसरे क्षेत्रों में चले गए। हालांकि, सिंगूर में सभी लोग टाटा की वापसी के पक्ष में नहीं हैं। सिंगूर कृषि रक्षा समिति के प्रमुख सदस्य प्रबीर पात्रा का कहना है कि उनका विरोध उद्योगों से नहीं था और न ही आज है। उनका कहना है कि उनका संघर्ष केवल तीन फसली उपजाऊ जमीन को बचाने के लिए था और यदि फिर से ऐसी स्थिति बनती है तो वे दोबारा आंदोलन

खासेरभेड़ी गांव के स्वरूप दास ने भी दो बीघा जमीन परियोजना के लिए दी थी। वे बताते हैं कि मुआवजा मिलने के बाद वे दुबई चले गए थे, जबकि उनके दोनों भाइयों का चयन टाटा ने मैकेनिकल इंजीनियरिंग प्रशिक्षण के लिए किया था। उत्तराखंड में ट्रेनिंग शुरू हो चुकी थी और नौकरी की उम्मीद भी थी, लेकिन परियोजना बंद होने के साथ सारे सपने टूट गए। उनका कहना है कि यदि आज टाटा या कोई दूसरी बड़ी कंपनी आती है तो वे फिर जमीन देने के लिए तैयार हैं।

रेप के आरोपी ने जमानत मिलते ही 6 हत्याएं कीं, पहले पत्नी-बच्चों, फिर पीड़ित और उसके परिवार को मार डाला

ब्रह्मास्त्र ▸▸ रंगा रेड्डी

तेलंगाना के रंगा रेड्डी जिले में नाबालिग से रेप के एक आरोपी ने शुक्रवार रात जमानत पर बाहर आते ही 6 हत्याएं कर दीं। पहले उसने अपनी 30 साल की पत्नी, 4 साल और 18 महीने के दो बेटों की हत्या की।

इसके बाद वह करीब 6 किलोमीटर दूर दूसरे गांव पहुंचा। जहां उसने 17 साल की रेप पीड़ित, उसकी मां और नानी को भी मार दिया। लड़की ने 16 मई को पॉक्सो एक्ट के तहत आरोपी राजकुमार के खिलाफ रेप का केस दर्ज कराया था।

लड़की के मामा नरेश ने बताया, उसने मेरी चाची और भांजी की हत्या कर दी। उसने पहले भी लड़की को परेशान किया था और उस पर पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया। उसने धमकी दी थी वह एक-दो हफ्ते में पूरे परिवार को मार डालेगा। मामला दर्ज होने के बाद भी उसे पूछताछ या रिमांड के लिए नहीं ले जाया गया।

उसके परिवार को पता था कि वह कहां है, लेकिन पुलिस को इसकी जानकारी नहीं थी और मामला ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। घटना के 20 दिन बाद हमने उन्हें फिर से बताया कि वह घूम रहा है और कह रहा है कि वह लड़की को मार डालेगा। उन्होंने कहा कि वे उसे ढूंढ रहे हैं। मामला दर्ज होने के सिर्फ दो दिन बाद ही वह जमानत पर बाहर आ गया था। उसने रिश्वत दी थी और मामला दबा दिया गया। अब उसने लड़की की हत्या कर दी है और यह सब पुलिस की लापरवाही की वजह से हुआ है। उन्हें सस्पेंड किया जाना चाहिए और आरोपी को हमारे हवाले कर देना चाहिए।

POCSO एक्ट क्या है?

POCSO (Protection of Children from Sexual Offences Act, 2012) बच्चों को यौन अपराधों से सुरक्षा देने के लिए बनाया गया कानून है। यह 18 साल से कम उम्र के सभी बच्चों पर लागू होता है।

किन अपराधों में लागू होता है?

- दुष्कर्म
- यौन उत्पीड़न
- छेड़छाड़
- अश्लील वीडियो/फोटो बनाना या दिखाना

कितनी सजा होती है?

- **यौन उत्पीड़न:** 3 से 5 साल तक की जेल।
- **गंभीर यौन उत्पीड़न:** 5 से 10 साल या उससे अधिक।
- **दुष्कर्म:** कम से कम 10 साल की जेल, जिसे उम्रकैद तक बढ़ाया जा सकता है।
- **गंभीर परिस्थितियों में दुष्कर्म:** उम्रकैद या कुछ मामलों में मृत्युदंड भी हो सकता है।

क्या इसमें जमानत मिल सकती है?

हां, लेकिन आसानी से नहीं। POCSO में कई गंभीर अपराध गैर-जमानती है। जमानत देने का फैसला अदालत करती है।

मोदी बोले- मैं 25 साल पुराना मफलर पहनकर न्यूजीलैंड आया

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

पीएम मोदी ने शनिवार को न्यूजीलैंड के ऑकलैंड में भारतीय समुदाय को संबोधित किया। इस दौरान पीएम ने करीब तीन दशक पुराना किस्सा सुनाया। पीएम ने कहा- 25-30 साल पहले जब मैं किसी सरकार का हिस्सा नहीं था, तब मुझे यहां आने का मौका मिला था। उस समय मुझे किसी ने गिफ्ट में 3 चीजें दीं, जो मैं भारत लेकर गया। एक- मफलर, दूसरी- कैप और तीसरा- एक सेट दस्ताना। उसमें भी एक चीज मैं अभी यहां इस कार्यक्रम में भी लेकर आया हूं। इस मफलर को मैंने कई बार इस्तेमाल किया और आज भी संभाल कर रखा है।

पीएम ने आगे कहा कि हमारे लिए सामने वाले देश की जनसंख्या नहीं, जनकल्याण की भावना मायने रखती है। और इसलिए हमने न्यूजीलैंड से भी बहुत कुछ सीखा है और अब भी सीख रहे हैं। इस कार्यक्रम के बाद मोदी भारत के लिए रवाना हो गए।

ये कोलेब का जमाना है, दोनों देश साथ: अगर हम कंटेंट क्रिएटर्स की भाषा में बात करें तो ये कोलेब का जमाना है। दोनों देश स्पोर्ट्स में भी बहुत शानदार कोलेब कर सकते हैं। रग्बी इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। भारत रग्बी में न्यूजीलैंड से सीखना चाहता है। हमें कोच चाहिए, एक्सपर्ट चाहिए। न्यूजीलैंड हमारी बहुत मदद कर सकता है।

चंद्रयान की लैंडिंग पर न्यूजीलैंड नाच रहा था: भारत और न्यूजीलैंड का भविष्य जुड़ा है। स्पेस से सेक्टर इसका बहुत बड़ा उदाहरण है। भारत का चंद्रयान जब मून के साउथ पोल पर लैंड किया तो न्यूजीलैंड नाच रहा था। उस दिन हमें गर्व हुआ। यहां की स्पेस कंपनियों ने कई बार हमारे साथ मिलकर काम किया है।

सुप्रीम कोर्ट महाराष्ट्र सरकार से बोला-आपको पब्लिक में बेनकाब करेंगे

मुकदमों की सुनवाई में तेजी नहीं लाने पर फटकारा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ मुंबई

सुप्रीम कोर्ट ने जमानत का विरोध करने, लेकिन मुकदमों की सुनवाई में तेजी नहीं लाने पर महाराष्ट्र सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार हर मामले में जमानत का विरोध करती है, लेकिन ट्रायल जल्द पूरा कराने के लिए जरूरी कदम नहीं उठाती। कोर्ट ने चेतावनी दी कि अगर यही स्थिति रही तो वह सरकार को पब्लिक में बेनकाब करेगा।

रिपोर्ट के मुताबिक जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस शील नागू की बेंच एक विदेशी नागरिक की जमानत याचिका पर सुनवाई कर रही थी। आरोपी अपहरण और हत्या के मामले में गिरफ्तार है। उसने कोर्ट को बताया कि वह पिछले चार साल से जेल में है और इस दौरान उसका मामला ट्रायल कोर्ट में 86 बार लिस्ट हुआ, लेकिन उसे 53 बार कोर्ट में पेश ही नहीं किया गया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि आरोपी को ट्रायल कोर्ट में पेश नहीं करना महाराष्ट्र सरकार की गंभीर चूक है। अदालत ने कहा कि चार साल में 34 में से सिर्फ दो गवाहों की गवाही हो पाई है। यह स्थिति परेशान करने वाली है। महाराष्ट्र सरकार की ओर से पेश वकील ने अदालत को बताया कि अब राज्य सभी आरोपियों को हर सुनवाई की तारीख पर ट्रायल कोर्ट में पेश कर रहा है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राज्यों को मुकदमों की सुनवाई तेज करने के लिए स्पष्ट नीति बनानी चाहिए। अदालत ने ट्रायल कोर्ट को निर्देश दिया कि हर सप्ताह कम से कम चार गवाहों की गवाही दर्ज की जाए और इस आदेश को रिकॉर्ड पर रखा जाए। बेंच ने यह भी कहा कि अगर भविष्य में इस तरह के मामले अदालत के सामने आए तो ऐसे ही कड़े आदेश पारित किए जाएंगे।

अमेरिका ने ईरान पर एयरस्ट्राइक की:न्यूक्लियर सिटी बुशहर को निशाना बनाया

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नई दिल्ली

अमेरिका ने शनिवार देर रात ईरान पर एयरस्ट्राइक की। अमेरिकी सेंट्रल कमांड के मुताबिक, न्यूक्लियर सिटी बुशहर समेत असालुयेह, बंदर-ए-देयर, जास्क और चाबहार के सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया गया। ईरानी मीडिया ने इन इलाकों में धमाकों की पुष्टि की है। अमेरिका के मुताबिक यह कार्रवाई होर्मुज स्ट्रेट में साइप्रस के झंडे वाले कंटेनर जहाज पर हुए हमले के जवाब में की गई। हमले में जहाज में आग लग गई, इंजन को भारी नुकसान पहुंचा और चालक दल का एक सदस्य लापता है। हमलों के बाद ईरान ने भी सख्त चेतावनी दी है। विदेश मंत्रालय के सलाहकार अली सफारी ने कहा कि अमेरिका को इस कार्रवाई का जवाब दिया जाएगा। साथ ही ईरान ने साफ किया कि जब तक अमेरिकी दखल जारी रहेगा, तब तक होर्मुज स्ट्रेट बंद रहेगा। अमेरिका के हमलों के बीच ईरान ने दक्षिण-पश्चिमी शहर बंदर-ए-महशहर में एयर डिफेंस सिस्टम एक्टिव कर दिया है। ईरान की मेहर न्यूज एजेंसी के मुताबिक, खुजेस्तान प्रांत के इस शहर में हवाई सुरक्षा प्रणाली अलर्ट पर है। स्थानीय प्रशासन ने फिलहाल यह नहीं बताया है कि शहर पर कोई हमला हुआ है या नहीं। हालांकि एयर डिफेंस सक्रिय होने से माना जा रहा है कि सुरक्षा एजेंसियां किसी संभावित हवाई खतरे पर नजर बनाए हुए हैं।

■ वर्ष-12 अंक-249 मूल्य- 2 रु. मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ गुजरात महाराष्ट्र राजस्थान उत्तरप्रदेश उत्तरांचल मालवा डिवीजन 402/2024-2026 आर एन आई क्रमांक 2013/57651

सुभाषितानि

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥

भावार्थ : लक्ष्मी की ज्येष्ठ बहिन अलक्ष्मी (दरिद्रता की अधिष्ठात्री देवी) का, जो क्षुधा और पिपासा से मलिन और क्षीणकाय रहती हैं, इनका मैं नाश चाहता हूँ। देवि ! मेरे घर से सब प्रकार के दारिद्र्य और अमंगल को दूर करो।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

दैनिक ब्रह्मास्त्र

उज्जैन, रविवासरः 12 जुलाई, 2026

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुभूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥

भावार्थ : देवि! देवसखा कुबेर और उनके मित्र मणिभद्र तथा दक्ष प्रजापति की कन्या कीर्ति मुझे प्राप्त हों अर्थात मुझे धन और यश की प्राप्ति हो। मैं इस राष्ट्र में उत्पन्न हुआ हूँ, मुझे कीर्ति और ऋद्धि प्रदान करें।

सम्पादकीयम्

अस्माकं समाजे विवाहं परितः

सम्बन्धस्य 'निर्गमयोजना' सवेर्षां कृते किमर्थं अत्यावश्यकी–विवाहात् भयं कुर्वन्तु, तलाकात् न अस्माकं समाजे विवाहं परितः यत् उत्साहः सज्जता च तलाकस्य उल्लेखमात्रेण अवतरति तस्य मौनस्य सर्वथा विपरीतम् अस्ति विवाहार्थं जनाः चोदिताः भवन्ति चेदपि दुर्लभाः एव उपदिश्यन्ते यत् यदि कश्चन सम्बन्धः तेषां जीवनं नाशयितुं आरभते तर्हि तेषां गौरवेण तस्मात् निर्गमनस्य अधिकारः अस्ति। मण्डूकस्य कथा श्रुता वा? चूल्हे जलपात्रे मण्डूकः स्थापितः। यथा यथा जलस्य तापः वर्धते स्म तथा तथा मण्डूकः वर्धमानस्य तापस्य अनुरूपं स्वस्य शरीरस्य तापं समायोजयति स्म। यदि किं आगच्छति इति अवगच्छति स्म तर्हि आरम्भे एव बहिः प्लवितुं शक्नोति स्म; अपितु वर्धमानस्य तापमानस्य अनुकूलतां प्राप्तुं प्रयतमानोऽपि सर्वा शक्तिं क्षीणं कृतवान्। अन्ते जलं क्वथितुं आरब्धम्, तापः च असह्यः अभवत्। तदा बहिः कूर्दितुं प्रयत्नं कृतवान्, परन्तु न शक्तवान्। किमर्थं भवन्तः जानन्ति वा? यतः समायोजनस्य हठिना आग्रहे पूर्वमेव क्षीणं कृत्वा सर्वं बलं साहसं च अपव्ययितम् आसीत्। अन्ते तस्य क्वथनजलस्य अन्तः पीडया नष्टम् अभवत्। अस्माकं समाजे बहवः जनाः- पुरुषाः महिलाः च-दुष्टे, दमघोषकविवाहे फसन्तः तस्य मण्डूकस्य इव एव वर्तन्ते।

नगर निगमस्य जर्जरभवनानां विरुद्धं अभियानम्: अधरताले गृहं ध्वस्तम्

भवनातिक्रमणविभागेन एतादृशसंरचनानां पहिचानं कृत्वा आवश्यककार्याणि

ब्रह्मास्त्र ▸▸ भोपाल

मानसूनऋतौ जनसुरक्षां सुनिश्चित्य नगरनिगमेन नगरे जर्जर-खतरनाक-भवनानां विरुद्धं अभियानं तीव्रं कृतम् अस्ति नगर आयुक्त रामप्रकाश अहिरवारस्य निदेर्शानुसारं निगमस्य भवनातिक्रमणविभागेन एतादृशसंरचनानां पहिचानं कृत्वा आवश्यककार्याणि कर्तुं विभिन्नक्षेत्रेषु संयुक्तकार्यक्रमाः कृताः। वर्षाणां समये भवनस्य पतनस्य जोखिमः वर्धते इति अधिकारिणः अवदन्; अतः प्राणहानिः न्यूनीकर्तुं सक्रियपरिहाराः क्रियन्ते।

अपर आयुक्त देवेन्द्रसिंह चौहान तथा सौरभ मिश्रा के नेतृत्व में नगर निगम के दल ने नगरस्य विभिन्न भागों का निरीक्षण किया। अभियानस्य कालखण्डे पिसंहारी की मधियाक्षेत्रे (सरदार वल्लभभाई पटेलवार्डस्य अन्तर्गतम्) गम्भीररूपेण जर्जरभवनस्य विषये कार्यवाही आरब्धा। निरीक्षणं कृत्वा भवनस्वामिना अधिकारिभ्यः आश्वासनं दत्तं यत् ते स्वयमेव संरचनायाः रिक्तं खतरनाकं च खण्डं निष्कासयिष्यन्ति इति। एतत् गृहीत्वा-तथा च नियामक-अनुपालनेन सह संवेदनशीलतायाः सन्तुलनं कृत्वा-अधिकारिणः स्वामिने जर्जर-भागानाम् सुरक्षितरूपेण विच्छेदनार्थं त्रिदिवसीय-विण्डो-प्रदानं कृतवन्तः निगमेन स्पष्टीकृतं यत् यदि अस्मिन् समये अपेक्षिता कार्यवाही न क्रियते तर्हि प्रशासनं स्वयं संरचनायाः ध्वंसनं कर्तुं प्रवर्तयिष्यति।

अग्रियघटनानां निवारणाय कार्यकाले विस्तृताः सुरक्षाव्यवस्थाः कृताः। भवन-अतिक्रमण-विभागस्य बहूनां अधिकारिणः, कर्मचारी च अस्मिन् स्थले उपस्थिताः

आसन्। प्रमुख कर्मियों-अतिक्रमण दस्ते के साथ-साथ संभागीय भवन अधिकारी शैलेन्द्र कौरव, अतिक्रमण अधिकारी कृष्णपाल सिंह रावत, संभागीय भवन अधिकारी दिगदर्श सिंह, संभागीय अधिकारी सुरेन्द्र मिश्रा, तथा भवन उप-इंजीनियर यशवंत सोनी सहित-अतिक्रमण दस्ते के साथ-साथ सम्पूर्ण कार्यवाही की निरीक्षण किया। अस्यैव अभियानस्य भागत्वेन नगरनिगमेन अधरतालस्य रविन्द्रनगरक्षेत्रे अन्यत् खतरनाकं जर्जरं च गृहं ध्वस्तं कृतम्। अपर आयुक्त देवेन्द्रसिंहचौहानस्य उपस्थितौ यन्त्राणां उपयोगेन संरचनां सुरक्षिततया अवतारितम्। कार्यकाले परितः क्षेत्रस्य सुरक्षां सुनिश्चित्य आवश्यकाः सावधानताः कृताः, सामान्यजनस्य आवागमनस्य नियमनं च कृतम् यत् किमपि सम्भाव्यं जोखिमं न भवेत्। नगरनिगमस्य अधिकारिणः अवदन् यत् नगरे सर्वत्र निरन्तरं सर्वेक्षणं क्रियते यत् दीर्घकालं यावत् जर्जरस्थितौ स्थितानां भवनानां पहिचानं भवति, जीवनस्य सम्पत्तिस्य च कृते खतरा उत्पद्यन्ते। एतादृशभवनानां स्वामिनः पूर्वं सूचनाः निर्गताः सन्ति, येन तेभ्यः स्वयमेव कार्यवाही कर्तुं अवसरः प्राप्यते। यदि निर्धारितसमयान्तरे भवनं न निष्कासितम् अस्ति तर्हि नगरनिगमः नियमानुसारं तस्य ध्वंसनं कर्तुं प्रवर्तयिष्यति, तत्सम्बद्धं व्ययः भवनस्वामिना वसूलितुं शक्यते।

विश्वकपस्य क्वार्ट-फायनल्

क्रीडायाः पूर्वं सुनील-क्षेत्री-महोदयस्य साहसिकः दावाः

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नव देहली

फीफा-विश्वकप-क्वार्ट-फाइनल्-क्रीडायाः रोमाञ्चकारी-सङ्घर्षात् पूर्वं भारतीय-फुटबॉल-किंवदन्तिः पूर्व-कप्तानः च सुनील-क्षेत्री-इत्यनेन वर्तमान-विश्व-विजेता-फ्रांस्-देशः उपाधि-प्राप्त्यर्थं सशक्ततमः दावेदारः इति चिह्नितः अस्ति मोरक्कोविरुद्धस्य उच्च-वोल्टेज-क्रीडायाः पूर्वं क्षेत्री इत्यनेन टिप्पणी कृता यत् विश्वे अत्यल्पाः एव दलाः यस्य गुणवत्ता, अनुभवः, गतिः, फिटनेसः, गभीरता च फ्रान्स्-देशस्य अस्ति तस्य सङ्गतिं कर्तुं शक्नुवन्ति सः मन्यते यत् फ्रान्सस्य महत्तमं बलं तस्य दृढं बेन्चबलं वर्तते, यत्र तारकक्रीडकस्य अभावे अपि समानकैलिबरस्य प्रतिस्थापनं क्षेत्रं प्रति पदानि स्थापयति।

फीफा विश्वकपविशेषज्ञपरिषदः भागः सुनीलक्षेत्री इत्यनेन उक्तं यत् फ्रान्सदेशस्य विरुद्धं सट्टेबाजी अत्यन्तं कठिना अस्ति। तस्य मते फ्रान्सदेशस्य गतिः, सहनशक्तिः, प्रमुखप्रतियोगितासु अनुभवः, विश्वस्तरीयाः क्रीडकाः, विजयमानसिकता च अस्ति। सः अवदत् यत् यदि कश्चन प्रमुखः खिलाडी किमपि कारणेन अनुपलब्धः भवति तर्हि तस्य प्रतिस्थापनं अद्यापि विश्वस्तरीयगुणवत्तायाः एव अस्ति। अत एव फ्रान्स्-देशः प्रमुखेषु स्पर्धासु निरन्तरं तेजस्वी प्रदर्शनं कृतवान्, तेषां गणस्य दुर्बलतां अन्वेष्टुं च सुलभं कार्यं नास्ति। क्षेत्री इत्यनेन फ्रान्सस्य सामर्थ्यं केवलं प्रारम्भिक एकादशपर्यन्तं सीमितं नास्ति इति बोधितम्। सः अवदत् यत् आरम्भकाः, बेन्चे विकल्पाः, ये अपि फुटबॉलक्रीडकाः नियमितरूपेण क्षेत्रं न गृह्णन्ति, तेषां सवेर्षां विश्वस्तरीयप्रतिभा वर्तते। एषा गभीरता फ्रान्सदेशं अन्यदलेभ्यः भिन्नं करोति, दीर्घकालीनप्रतियोगितायाः बलिष्ठतमप्रतियोगिषु अन्यतमं च इति स्थापयति।

वाणिज्यिकवाहनक्षेत्रे प्रौद्योगिक्याः विद्युत्गतिशीलतायाश्च तीव्रप्रगतिः

ब्रह्मास्त्र ▸▸ नव देहली

भारतस्य वाणिज्यिकवाहनक्षेत्रे प्रौद्योगिकी-आधारित-इन्धन-प्रबन्धनेन, विद्युत्-गतिशीलतायाः च कारणेन तीव्र-परिवर्तनं दृश्यते। कम्पनयः निरन्तरं नवीनप्रौद्योगिकीषु उत्पादेषु च ध्यानं ददति येषां उद्देश्यं परिचालनदक्षतां वर्धयितुं, परिचालनव्ययस्य न्यूनीकरणं, स्वच्छतरपरिवहनव्यवस्थानां प्रचारः च भवति राजधानीयां आयोजिते 'प्रवास ५.०' गतिशीलताप्रदर्शने अनेकाः प्रमुखाः कम्पनयः अस्मिन् दिशि स्वस्य नवीनसमाधानं उत्पादं च प्रदर्शितवन्तः।

राशिफल

मेष : आज काम की रफ्तार अच्छी रहेगी। सुबह से ही कुछ जरूरी काम पूरे करने की कोशिश करेंगे।

वृषभ : आज किसी पुराने काम का अच्छा नतीजा मिल सकता है। ऑफिस में आपके काम की तारीफ होगी।

मिथुन : आज नए लोगों से मुलाकात हो सकती है। कोई जरूरी जानकारी आपके काम आ सकती है।

कर्क : आज मन कई बातों में उलझ सकता है, लेकिन धैर्य रखने से रास्ता निकल आएगा। काम समय पर पूरे करने की कोशिश करें।

सिंह : आज मेहनत का फायदा मिलने के संकेत हैं। लंबे समय से रुका कोई काम आगे बढ़ सकता है।

कन्या : आज जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। काम का दबाव रहेगा, लेकिन आप उसे संभाल लेंगे। किसी भी बात पर गुस्सा करने से बचें।

तुला : आज दिन सामान्य रहेगा। हर काम योजना बनाकर करेंगे तो फायदा होगा। किसी दोस्त से अच्छी सलाह मिल सकती है।

वृश्चिक : आज नए लोगों से जुड़ने का मौका मिलेगा। साझेदारी में किया गया काम फायदा दे सकता है।

धनु : आज रिश्तों में मिठास बढ़ेगी। परिवार और दोस्तों के साथ अच्छा समय बीतेगा। नौकरी में नई जिम्मेदारी मिल सकती है।

मकर : हर काम आराम से और समझदारी के साथ करें। नौकरी में आपके काम की सराहना हो सकती है।

कुंभ : आज भाग्य का साथ मिल सकता है। रुका हुआ काम फिर से शुरू होने की संभावना है। छात्रों का मन पढ़ाई में लगेगा।

मीन : आज मेहनत का पूरा फल मिलने की उम्मीद है। पुराने रुके काम पूरे हो सकते हैं। नौकरी में नई जिम्मेदारी मिल सकती है।

ज्योतिष/वास्तु

गुरु अस्त के दौरान इन कार्यों से करें परहेज, 30 दिनों तक इन 3 राशियों की रहेगी बल्ले-बल्ले

14 जुलाई से 12 अगस्त 2026 के बीच गुरु सूर्य के अत्यधिक समीप रहने के कारण अस्त रहेंगे। कुछ राशियों के लिए यह समय विशेष रूप से लाभकारी भी साबित हो सकता है। आइए जानते हैं किन राशियों को मिलेगा फायदा।

देवगुरु बृहस्पति का अस्त होना सभी 12 राशियों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। 14 जुलाई से 12 अगस्त 2026 के बीच गुरु सूर्य के अत्यधिक समीप रहने के कारण अस्त रहेंगे। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार इस अवधि में विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन जैसे मांगलिक कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त नहीं निकाले जाते। हालांकि, कुछ राशियों के लिए यह समय विशेष रूप से लाभकारी भी साबित हो सकता है। आइए जानते हैं किन राशियों को मिलेगा फायदा।

मेष राशि- मेष राशि के जातकों के लिए इस समय गुरु चतुर्थ भाव में स्थित हैं, जिससे करियर, शिक्षा और पारिवारिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार के संकेत हैं और लंबे समय से अटका हुआ धन वापस मिलने की संभावना बन रही है। व्यापार से जुड़े लोगों को नई साझेदारी या लाभदायक सौदे मिल सकते हैं, जिससे आय में वृद्धि होगी। नए आय स्रोत विकसित होने के योग हैं और

भाग्य का साथ मिलने से रुके हुए कार्य भी आगे बढ़ेंगे। समझदारी से लिए गए निर्णय भविष्य में बेहतर परिणाम देंगे।

धनु राशि- धनु राशि के लिए गुरु आठवें भाव में गोचर कर रहे हैं। इस दौरान गुरु का अस्त होना व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से मजबूत बना सकता है। लंबे समय से रुके हुए कार्य धीरे-धीरे पूरे होने लगेंगे। पैतृक संपत्ति, बीमा, कर या विरासत से जुड़े मामलों में प्रगति के संकेत हैं। विवाह योग्य लोगों को अच्छे प्रस्ताव मिल सकते हैं और नौकरी में वरिष्ठों का सहयोग करियर को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकता है।

कर्क राशि- कर्क राशि वालों के लिए गुरु वर्तमान में लग्न भाव में स्थित हैं, जिससे व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता में सुधार देखने को मिलेगा। गुरु के अस्त रहने के बावजूद यह समय कई मामलों में अनुकूल साबित हो सकता है। विदेश यात्रा या विदेशी कंपनियों से जुड़े कार्यों में सफलता मिल सकती है। नौकरीपेशा लोगों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, जिससे नई जिम्मेदारियां और प्रमोशन के अवसर बन सकते हैं। संतान से जुड़ी कोई अच्छी खबर मन को प्रसन्न करेगी और करियर में आगे बढ़ने के नए रास्ते खुलेंगे।

गुरु अस्त के दौरान किन कार्यों से बचें

- वैदिक ज्योतिष में गुरु को शुभता, धर्म, ज्ञान, विवाह और संतान का कारक ग्रह माना जाता है। जब गुरु अस्त होते हैं, तब उनकी शुभता कमजोर हो जाती है, इसलिए इस समय मांगलिक कार्यों को टालना उचित माना जाता है।
- **विवाह से परहेज करें-** गुरु विवाह के प्रमुख कारक ग्रह हैं, इसलिए उनके अस्त रहने पर विवाह के शुभ मुहूर्त नहीं निकाले जाते। इस दौरान विवाह करने से वैवाहिक जीवन में बाधाएं आ सकती हैं।
- **धार्मिक अनुष्ठान टालें-** मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा, यज्ञ, कलश स्थापना और अन्य बड़े धार्मिक कार्यों के लिए गुरु का शुभ होना जरूरी होता है। इसलिए इस अवधि में ऐसे कार्यों को स्थगित किया जाता है।
- **गृह प्रवेश और अन्य शुभ कार्य न करें-** नए घर में प्रवेश, मुंडन, उपनयन, नए व्यवसाय की शुरूआत जैसे कार्य भी इस समय नहीं किए जाते। मान्यता है कि ऐसा करने से जीवन में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं।

बटलर और ब्रूक की रिकॉर्ड साझेदारी, ट्रैफिक में फंसी टीम इंडिया, स्टेडियम लेट से पहुंची

भारत पहली बार सीरीज में 4 मैच हारा

ब्रह्मास्त्र ▸▸ साउथैम्पटन

इंग्लैंड ने पांचवे टी-20 मैच में भारत को 56 रन से हरा दिया। टीम इंडिया पहली बार किसी सीरीज या टूर्नामेंट में 4 मैच हारी है। इंग्लिश टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 257 रन बनाए। यह भारत के खिलाफ किसी टीम का सबसे बड़ा स्कोर है। यह मैच आधे घंटे से देरी से शुरू हुआ। दरअसल भारतीय टीम ट्रैफिक की वजह से आधे घंटे देरी से स्टेडियम पहुंची।

इंग्लैंड ने 3 विकेट पर 257 रन बनाए। टी-20 में भारत के खिलाफ किसी भी टीम का यह सबसे बड़ा स्कोर है। इससे पहले भी यह रिकॉर्ड इंग्लैंड के ही नाम था। टीम ने 2026 में वानखेड़े स्टेडियम में 246 रन बनाए थे।

भारत सीरीज में 4 मैच हारा- भारत सीरीज में 4 मैच हारा। यह किसी टी-20 सीरीज या टूर्नामेंट में भारत को मिली सबसे ज्यादा हार है। इससे पहले टीम किसी भी सीरीज या टूर्नामेंट में 3 से ज्यादा मैच नहीं हारी थी।

ब्रूक ने 229 रन बनाए- हैरी ब्रूक ने 5 मैचों की टी-20 सीरीज में 229 रन बनाए। वे भारत के खिलाफ किसी बाइलेटरल सीरीज में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बने। उन्होंने वेस्टइंडीज के निकोलस पूरन का रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने 2022 में भारत के खिलाफ 3 मैचों में 184 रन बनाए थे।

इंग्लैंड ने 17 छक्के लगाए

इंग्लैंड ने साउथैम्पटन में 17 छक्के लगाए। यह भारत का किसी टी-20 मैच में दूसरा सबसे खराब प्रदर्शन है। वेस्टइंडीज ने 2016 में भारत के खिलाफ सबसे छक्के लगाए थे। उन्होंने लॉडरहिल में खेले गए मुकाबले में 21 छक्के लगाए थे।

श्रेयस ने धोनी की बराबरी की

श्रेयस अय्यर ने टी-20 में लगातार टॉस जीतने के मामले में धोनी की बराबरी की। उन्होंने 2026 में लगातार 7वीं बार टॉस जीता। धोनी ने भी 2010 से 2012 के बीच लगातार 7 टॉस जीते थे। विराट कोहली 6 टॉस के साथ तीसरे नंबर पर हैं।

भारत के खिलाफ सबसे बड़ी साझेदारी- बटलर और ब्रूक ने 233 रन जोड़कर टी-20 में भारत के खिलाफ सबसे बड़ी साझेदारी की। यह रिकॉर्ड साउथ अफ्रीका के क्विंटन डी कॉक और डेविड मिलर के नाम था। उन्होंने 2022 में गुवाहाटी में नाबाद 174 रन जोड़े थे।

बटलर-ब्रूक ने इंग्लैंड के लिए सबसे बड़ी साझेदारी की- बटलर और ब्रूक ने साउथम्पटन में 233 रन की पार्टनरशिप की। यह टी-20 में इंग्लैंड के लिए किसी भी विकेट के लिए सबसे बड़ी साझेदारी है। इससे पहले डेविड मलान और ईयोन मॉर्गन ने 2019 में न्यूजीलैंड के खिलाफ नेपियर में 182 रन जोड़े थे।

बटलर-ब्रूक ने 233 रन की पार्टनरशिप की- बटलर और ब्रूक ने टी-20 में किसी भी विकेट के लिए दूसरी सबसे बड़ी साझेदारी की। उन्होंने दूसरे विकेट के लिए 233 रन जोड़े। अफगानिस्तान के हजरतुल्लाह जजाई और उस्मान गनी टॉप पर हैं। उन्होंने 2019 में आयरलैंड के खिलाफ देहरादून में 236 रन की पार्टनरशिप की थी।

बटलर ने इंग्लैंड के लिए दूसरी सबसे बड़ी पारी खेली- बटलर ने टी-20 में इंग्लैंड के लिए दूसरी सबसे बड़ी पारी खेली। उन्होंने 131 रन बनाए। फिल साल्ट ने 2025 में टीम के लिए हाईएस्ट स्कोर बनाया था। उन्होंने साउथ अफ्रीका के खिलाफ मैनचेस्टर में नाबाद 141 रन की पारी खेली थी।

अभिषेक शर्मा का 53वें टी-20 मैच में रिकॉर्ड- अभिषेक शर्मा बिना कोई दूसरा फॉर्मेट खेले सबसे ज्यादा टी-20 इंटरनेशनल खेलने वाले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने भारत के लिए 53 टी-20 मैच खेले हैं। अभिषेक ने अब तक वनडे या टेस्ट में डेब्यू नहीं किया है। वेस्टइंडीज के सैमुअल बद्री 52 मैचों के साथ दूसरे नंबर पर हैं।

लॉर्ड्स टेस्ट- भारत को 115 रन की बढ़त

ब्रह्मास्त्र ▸▸ लंदन

लॉर्ड्स में खेले जा रहे एकमात्र महिला टेस्ट के दूसरे दिन भारत ने मैच पर मजबूत पकड़ बना ली है। इंग्लैंड की पहली पारी सिर्फ 170 रन पर सिमट गई। पहली पारी के आधार पर टीम इंडिया को 115 रन की बढ़त मिली। टीम ने 285 रन बनाए थे। भारतीय तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ ने 37 रन देकर 5 विकेट लिए। सयाली सतघरे और स्नेह राणा ने 2-2 विकेट झटके। दीप्ति शर्मा ने 1 विकेट हासिल किया। इंग्लैंड ने पहले दिन के स्कोर 21/1 से आगे खेलना शुरू किया। भारतीय तेज गेंदबाजों के सामने उनका टॉप ऑर्डर बिखर गया।

इंग्लैंड फुटबॉल वर्ल्डकप के सेमीफाइनल में

नॉर्वे को क्वार्टर फाइनल में 2-1 से हराया, बेलिंगहैम ने दो गोल दागे

ब्रह्मास्त्र ▸▸ मियामी गार्डन्स

जूड बेलिंगहैम के दो गोल की बदौलत इंग्लैंड ने फुटबॉल वर्ल्ड कप 2026 के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। उसने रविवार के पहले मुकाबले में नॉर्वे को एक्स्ट्रा टाइम में 2-1 से हराया। इंग्लैंड 2018 के बाद पहली बार वर्ल्ड कप के अंतिम-4 में पहुंचा है।

मियामी स्टेडियम में खेला गया मुकाबला तय समय तक 1-1 की बराबरी पर रहा। उसके बाद रियल मैड्रिड के स्टार मिडफील्डर जूड बेलिंगहैम ने टीम के दोनों गोल किए। विजयी गोल एक्स्ट्रा टाइम के तीसरे मिनट में हराया। इंग्लैंड का सेमीफाइनल मैच अर्जेंटीना और स्विट्जरलैंड के बीच होने वाले मुकाबले की विजेता टीम से होगा। यह मुकाबला कंसास स्टेडियम में खेला जा रहा है। जूड बेलिंगहैम ने मैच में 2 गोल किए। उनके फीफा वर्ल्ड कप 2026 में अब तक 6 गोल हो गए हैं। इंग्लिश कैप्टन हैरी केन ने भी 6 गोल किए हैं। यह पहली बार है, जब इंग्लैंड के दो खिलाड़ियों ने एक ही वर्ल्ड कप में 5 या उससे अधिक गोल दागे हैं। गोलकीपर जॉर्डन पिकफोर्ड ने वर्ल्ड कप में इंग्लैंड के लिए अपना 18वां मैच खेलकर नया रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने पीटर शिल्टन के 17 मैचों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। वर्ल्ड कप इतिहास में इंग्लैंड के सबसे ज्यादा मैच खेलने वाले गोलकीपर बन गए। नॉर्वे की टीम पहली बार वर्ल्ड कप क्वार्टर फाइनल मैच खेल रही थी। इससे पहले टीम 1938 और 1998 में प्री-क्वार्टर फाइनल (राउंड ऑफ 16) तक पहुंची थी, जबकि 1994 में ग्रुप स्टेज से बाहर हो गई थी।

खबर एक नजर...

देवासरोड ग्राम सेमलिया में कार-बस के बीच भिड़ंत

उज्जैन। नरवर थाना क्षेत्र के ग्राम सेमलिया में कार और बस के बीच भिड़ंत हो गई। दुर्घटना में कार क्षतिग्रस्त हो गई और बस सड़क किनारे नाली पर चढ़ गई। गनीमत रही कि बड़ा हादसा घटित नहीं हुआ। कार चालक को चोंट लगी थी जिसे उपचार के लिये समीप अस्पताल भेजा गया। थाना प्रभारी बल्लू मंडलोई ने बताया कि दुर्घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस घटनास्थल पहुंची थी। कार नम्बर एमपी 09 झेड जे 0091 और बस नम्बर एमपी 42 झेड एच 9903 सामने आया। घायल कार चालक के बयान दर्ज कर मामले में आगे की जांच शुरू की जायेगी। फिलहाल यह पता नहीं चला है कि कार चालक कहां से कहां जा रहा था। बस में यात्री सवार थे, जो अन्य साधन से अपने गतंव्य को रवाना हो गये थे। बस उज्जैन की ओर आ रही थी।

नकली नोट मामले में सरेंडर करने वाले को भेजा जेल

उज्जैन। इंदौर-उज्जैन के बीच नकली नोट छापने और खपाने के मामले का खुलासा दिसंबर में पुलिस ने किया था। 2 आरोपियों से 17.50 लाख के नकली नोट बरामद किये गये थे। मामले में गिरोह का सरगना और उसका साथी फरार थे। मंगलवार को एक फरार आरोपी सोनू टाटावत निवासी हीरामिल की चाल ने सात माह बाद कोर्ट में सरेंडर कर दिया था। चिमनगंज थाना पुलिस ने पूछताछ के लिये 4 दिनों की रिमांड पर लिया था। इस दौरान उसका कहना था कि वह नकली नोट मामले में शामिल नहीं है। उसका पूर्व में गिरफ्तार हिमांशु गौसर से लेनदेन का मामला था, उसने फंसा है, पुलिस को उससे नकली नोट मामले में सरगना राजेश बरबटे का सुराग नहीं मिल पाया। शनिवार को रिमांड अवधि खत्म होने पर उसे कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से साइकिल सवार की मौत

उज्जैन। आगररोड पर शुक्रवार-शनिवार रात माथुर वैश्य धर्मशाला के सामने गायत्रीनगर में अज्ञात वाहन ने साइकिल सवार को टक्कर मार दी। दुर्घटना में साइकिल सवार की मौके पर मौत हो गई। सूचना मिलने पर चिमनगंज थाना पुलिस घटनास्थल पहुंची और मृतक को अस्पताल पहुंचाकर उसकी पहचान के प्रयास शुरू किये। उसके पास मिले दस्तावेजों के आधार पर पता चला कि कानीपुरा का रहने वाला संतोष पिता मुशीलाल भीलाला है। खबर मिलने पर परिजन अस्पताल पहुंचे और बताया कि इलेक्ट्रिक का काम करता था और गायत्रीनगर से वापस घर लौट रहा था। संतोष 2 बच्चों का पिता था। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर पोस्टमार्टम कराया और शव परिजनों को सौंप अज्ञात वाहन की तलाश शुरू की।

रेलवे ट्रेक पर घायल हालत में पड़ा मिला युवक

उज्जैन। पिंगलेश्वर रेलवे ट्रेक पर शनिवार सुबह एक युवक घायल हालत में पड़ा मिला। उसे उपचार के लिये लोगों की मदद से चरक अस्पताल पहुंचाया गया। प्रारंभिक जांच में युवक झाबुआ का रहने वाला कल्ला पिता केशु 39 साल होना सामने आया है। गंभीर चोंट होने पर वह बोल पाने की स्थिति में नहीं था। जिसके चलते उसके साथ हुई घटना का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस को आशंका है कि ट्रेन के गेट पर बैठ यात्रा करने के साथ सुबह के समय नींद का झोंका आने पर गिरा है। उसकी हालत में सुधार होने पर घटना के संबंध में स्पष्ट जानकारी सामने आ पायेगी।

सलाखों में महिदपुर का किंग बताने वाला फरार बदमाश

उज्जैन। महिदपुर थाना क्षेत्र के फकीर मोहल्ला में रहने वाले अब्दुल वहाब उर्फ अब्दुल्ला पिता मुजम्मिल शाह के साथ चार माह पहले 23 फरवरी को चार बदमाशों ने खुद को महिदपुर का किंग बताकर 10 हजार रूपयों करते हुए पाइप से मारपीट की थी। चारों बदमाशों निजाम उर्फ निजामुद्दीन शाह, शाहबुद्दीन शाह, मोईन शाह और मोईनउद्दीन शाह के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर तलाश शुरू की थी, जिनकी धरपकड़ के प्रयास लगातार जारी थे। एक बदमाश को घटना के कुछ दिन बाद गिरफ्तार कर लिया गया था। वहीं दूसरा बदमाश निजाम उर्फ निजामुद्दीन 29 जून को अवैध शराब के साथ गिरफ्त में आ गया था। अब मामले से जुड़े तीसरे आरोपी मोईन शाह को चार माह बाद गिरफ्तार किया गया है। थाना प्रभारी अशोक कुमार पाटीदार ने बताया कि चार माह बाद गिरफ्त में आये आरोपी को कोर्ट में पेश कर एक दिन की रिमांड पर लिया गया था। जिससे पूछताछ के बाद शनिवार को कोर्ट में पेश कर जेल की सलाखों में भेजा गया है। आरोपी मोईन के खिलाफ पूर्व में भी जानलेवा हमला, गाली-गलौच, अवैध वसूली और आर्म्स एक्ट के प्रकरण दर्ज है। थाना प्रभारी के अनुसार मामले में अब भी एक एक आरोपी फरार है। जिसकी गिरफ्तारी भी जल्द की जायेगी।

उज्जैन की प्रियांशी प्रजापत ने एमपी को दिलाया गोल्ड

उज्जैन। मध्य प्रदेश के उज्जैन की प्रियांशी प्रजापत ने अंडर-23 सीनियर नेशनल कुश्ती चैंपियनशिप में इतिहास रच दिया है। हरियाणा के रोहतक में आयोजित प्रतियोगिता में प्रियांशी ने 50 किलोग्राम वजन वर्ग समूह में दमदार प्रदर्शन करते हुए मध्य प्रदेश को पहला गोल्ड पदक दिलाया है। उन्होंने इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश का खाता भी खोल दिया है। तीन दिवसीय 10 से 12 जुलाई तक चलने वाली चैंपियनशिप में देशभर के विभिन्न राज्यों जैसे हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, महाराष्ट्र, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, राजस्थान और कर्नाटक से 70 से अधिक शीर्ष खिलाड़ियों ने शिरकत की है। मध्य प्रदेश की तरफ से 8 महिला पहलवानों का दल इस प्रतियोगिता में उतरा है।

फ्रीगंज में 2 दुकान पर वारदात, नागझिरी तक मिले फुटेज

कार से आये बदमाशों ने चुराये लाखों के मोबाइल

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

कार से शहर में आकर वारदात करने वाले बदमाश सक्रिय दिखाई दे रहे है। शुक्रवार-शनिवार रात बदमाशों ने 2 मोबाइल दुकानों से 80 लाख से अधिक के मोबाइल चोरी कर लिये। पुलिस बदमाशों का पता लगाने के लिये सीसीटीवी कैमरों के फुटेज खंगाल रही है।

माधवनगर थाना क्षेत्र के फ्रीगंज में शनिवार सुबह उस वक्त सनसनी फैल गई जब हाई च्वाइस और एसएस मोबाइल शॉप में करोड़ों के मोबाइल चोरी होने की खबर सामने आई। माधवनगर थाना सीएसपी दीपिका शिंदे, थाना प्रभारी गजेन्द्र पचौरिया के साथ फिंगर प्रिंट पड़ताल के लिये पहुंच गई। कैमरों के फुटेज देखने पर बदमाश रात ढाई बजे के लगभग कार से आना सामने आये। बदमाशों की संख्या 4 थी, बदमाशों ने चेहरे पर नकाब बांध रखा था और सिर पर टोपी लगा रखी थी। दोनों दुकानों का शटर उचकाने के बदमाशों ने मोबाइल उठाकर बेग में भरना शुरू किया और कुछ देर में 150 के लगभग मोबाइल लेकर भाग निकले। फिंगर प्रिंट की जांच में पता चला कि बदमाशों ने हाथों में ग्लब्स पहन रखे थे। बदमाशों ने एसएस मोबाइल शॉप का शटर उचकाने के बाद कांच का गेट भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया था। पुलिस की टीमों ने बदमाशों का पता लगाने के लिये कार के आने वाले और जाने वाले मार्गो पर लगे कैमरों के फुटेज देखना शुरू किये। एक टीम नागझिरी क्षेत्र तक के कैमरे खंगाल चुकी थी। दूसरी टीम देवास की ओर भागना सामने आने पर देवास तक पहुंच गई है। कार का नम्बर ट्रेस करने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन शाम तक नम्बर स्पष्ट नहीं हो पाया था। सीएसपी दीपिका शिंदे ने बताया कि दोनों मामलों में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। बदमाशों का पता लगाने के लिये पुलिस टीम काम कर रही है। मोबाइल की कीमत का आंकलन किया जा रहा है। स्पष्ट कीमत और मोबाइल की संख्या बता पाना मुश्किल है।

एक माह पहले लाखों की सिगरेट चोरी

माधवनगर थाना क्षेत्र के दशहरा मैदान में एक माह पहले महेश्वरी एजेंसी से लाखों की सिगरेट चोरी का मामला सामने आया था। उस दौरान भी बदमाश कार से आना सामने आये थे। पुलिस ने नम्बर ट्रेस किया था, लेकिन कार चोरी होना सामने आई थी। उक्त मामले में अब तक बदमाशों का पता नहीं चल पाया है। यहीं नहीं पिछले वर्ष नम्बर में फ्रीगंज स्थित भाजपा नगर मंत्री की होलसेल किराना दुकान पर भी बदमाशों ने धावा बोला था, जो कार से आना सामने आये थे।

परिचित ने शटर खुला देख दी सूचना

हाई च्वाइस मोबाइल शॉप का संचालन महाकाल सिंधी कालोनी में रहने वाले नरेश पिता भगवानदास सितलानी द्वारा किया जाता है। सुबह उनके परिचित ने दुकान का शटर उचका देखा तो सूचना दी। नरेश सितलानी के दुकान आने पर चोरी का पता चला। पुलिस जांच के लिये पहुंची तो कुछ दूरी पर एसएस मोबाइल दुकान में भी चोरी की जानकारी सामने आई। एसएस मोबाइल का संचालन ऋषिनगर में रहने वाले अभिषेक पिता विष्णु दवे द्वारा किया जाता है। दोनों के पास सेमसंग, ओपो, आईफोन, एमआई कंपनी के मोबाइल की एजेंसी है। देर शाम दर्ज हुई शिकायत में हाई च्वाइस से 41 लाख और एसएस मोबाइल से 38 लाख के मोबाइल चोरी होना सामने आ चुका था। जो प्रारंभिक जांच का आंकलन है। रिकार्ड मिलान पर कीमत का इजाफा हो सकता है।

एडमिशन के नाम पर ठगे थे 4.50 लाख

सिलीगुड़ी में क्लीनिक चलाता मिला धोखाधड़ी का आरोपी

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

मेडिकल कॉलेज में एडमिशन दिलाने के नाम धोखाधड़ी करने वाला शातिर मुख्य आरोपी सिलीगुड़ी में क्लीनिक चला रहा था। 3 माह बाद उसे गिरफ्तार कर ट्रांजिट रिमांड पर उज्जैन लाया गया है। आरोपी का साथी पूर्व में गिरफ्तार हो चुका है।

नीलगंगा थाना एसआई यादवेन्द्र परिहार ने बताया कि मंछामन कालोनी में रहने वाले सतीशचंद्र पटेल ने 29 मार्च को नीलगंगा थाने में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनके पुत्र हर्ष का मेडिकल कॉलेज में एडमिशन कराने के नाम पर 4.50 लाख की धोखाधड़ी हुई है। रिश्तेदार के माध्यम से बिहार स्थित कटिहार मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य आरबी गुप्ता से संपर्क हुआ था। ऑनलाइन ट्रांजेक्शन करने के बाद बिहार पहुंचे तो प्राचार्य गुप्ता ने एडमिशन से इंकार कर दिया और कहा कि उन्होने कोई संपर्क नहीं किया है। उनके नाम का उपयोग किसी के द्वारा किया गया है। मामले में प्रकरण दर्ज कर ट्रांजेक्शन किये गये खातों की पड़ताल की गई। जिसके आधार पर 3 माह बाद पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी से धोखाधड़ी के मुख्य आरोपी सुमंत्र पिता सैबल गुप्ता 45 साल को गिरफ्तार कर उज्जैन लाया गया है। जिसे रविवार को कोर्ट में पेश किया जायेगा। आरोपी काफी शातिर है, उसने एमबीबीएस किया और सिलीगुडी के माल बाजार में रिलिफ नर्सिंग होम नाम से क्लीनिक चलाता है। धोखाधड़ी में उसका एक साथी जयंत पिता ज्योति सरकार भी शामिल था। जिसे 4 मई को कानपुर जेल से पूछताछ के लिये प्रोटेक्शन रिमांड पर लाया गया था। उसकी के माध्यम से सुमंत्र के मुख्य आरोपी होने की जानकारी मिली थी।

कुछ राशि कॉलेज अकाउंट करता था जमा

एसआई परिहार ने बताया कि प्रारंभिक पूछताछ में पता चला कि आरोपी खुद एमबीबीएस कर चुका है। वह ऐसे लोगों की तलाश में रहता था, जिन्हे एमबीबीएस में सीट प्राप्त करना होती थी। उसके द्वारा देशभर के मेडिकल कॉलेजों की जानकारी ऑनलाइन प्राप्त कर रखी है। सीट प्राप्त करने वालों से संपर्क होने पर पहले कॉलेज अकाउंट में 20 से 25 हजार की राशि का ट्रांजेक्शन करता था। जिससे उसके जाल में फंसने वाले का विश्वास हो जाये। उसके बाद एनआरआई सीट दिलाने के नाम पर अलग-अलग अकाउंट में लाखों की राशि जमा करा लेता था। आरोपी और उसके साथी के खिलाफ दिल्ली, सिक्कीम, कानपुर सहित अन्य राज्यों में एडमिशन के नाम पर हुई ठगी के मामले दर्ज है।

कॉलेज को लौटा पड़ती है राशि

मंछामन कालोनी के पटेल परिवार से हुई धोखाधड़ी की राशि 25 हजार बिहार के कटिहार मेडिकल कॉलेज के खाते में पहुंची थी। शेष राशि आरोपी ने अपने खाते में जमा कराई थी। पटेल परिवार के बिहार पहुंचने पर कॉलेज प्राचार्य ने अपनी संस्था का अकाउंट चैक किया था, जिसमें ऑनलाइन 25 हजार आये थे। उन्होने कोर्ट आदेश के बाद राशि लौटाने की बात कहीं थी और बताया था कि पूर्व में एडमिशन के नाम उनके कॉलेज खाते में ऑनलाइन ट्रांजेक्शन हो चुका है। वह पूर्व में भी राशि लौटा चुके है।

एक्सप्रेस ट्रेन में सवार युवक के बेग से मिली ड्रग्स

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

मादक पदार्थ ड्रग्स के साथ एक्सप्रेस ट्रेन में सवार युवक को सर्चिंग के बाद आरपीएफ की टीम ने पकड़ा तो उसके पास से पिट्ठू बेग में छुपाकर रखी 10 लाख कीमत की एमडी ड्रग्स बरामद हो गई। युवक को नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरों इंदौर के सुपुर्द किया गया है।

आरपीएफ निरीक्षक नरेन्द्र यादव ने बताया कि इंदौर नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरों से इनपुट मिला था कि जयपुर-मनारगुडी एक्सप्रेस में युवक मादक पदार्थ के साथ यात्रा कर रहा है। ट्रेन के उज्जैन स्टेशन पहुंचते ही एएसआई साजिद हुसैन, प्रधान आरक्षक मुख्तारसिंह, महेन्द्रसिंह, राजाराम यादव, कमलसिंह और आरक्षक आशीष मारवाल के साथ सर्चिंग शुरू की गई। ट्रेन के एस-1 कोच में संदिग्ध युवक दिखाई दिया, जिसके पास पिट्ठू बैग था। उसे हिरासत में लिया गया और बेग की तलाशी ली गई। जिसमें से 10 लाख कीमत की 80 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद हो गई। युवक को आरपीएफ पोस्ट लाया गया और पूछताछ की गई। उसका नाम राजू पिता भंवरलाल विश्नोई निवासी ग्राम पीथावास जिला जोधपुर होना बताया पाया गया। पूछताछ में उसने बताया कि वह कोटा से हैदराबाद की यात्रा कर रहा था। भोपाल पहुंचकर उसे ट्रेन बदलना थी। वह ड्रग्स सप्लाय का काम करता है। पहली बार गिरफ्त में आया है। दक्षिण भारत में ड्रग्स की अच्छी कीमत मिलती है। निरीक्षक यादव के अनुसार युवक के हिरासत मे आने पर नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरों इंदौर को सूचना दी गई। उसे पूछताछ के लिये इंदौर ले जाया गया है।

एनसीबी इंटपुट मिलने पर आरपीएफ ने पकड़ा

उत्कृष्ट विद्यालय में हंगामा, शिक्षक पर मारपीट का आरोप

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

उत्कृष्ट विद्यालय माधवनगर शनिवार को उस वक्त हंगामा हो गया, जब छात्र और शिक्षक के बीच धक्का-मुक्की के बाद मारपीट हो गई। छात्रों ने विरोध दर्ज कराया और कक्षा से बाहर आ गये। मामले की खबर एबीवीपी को मिली तो विद्यालय पहुंचे और छात्र के साथ हुई मारपीट को लेकर चक्काजाम कर दिया।

उत्कृष्ट विद्यालय माधवनगर की प्राचार्य विभा शर्मा ने बताया कि स्कूल में इंटरर्नशीप के लिए आई श्रुति जायसवाल नामक युवती को कक्षा 12 वीं कला संकाय में लेक्चर के लिए भेजा गया था। जहां लेक्चर के दौरान कक्षा के छात्र और उनके बीच विवाद की स्थिति बनी थी। इस दौरान विद्यालय के प्रयोगशाला शिक्षक रविश पांडे पहुंचे और उन्होंने छात्र को डपटा तो दोनों के बीच विवादित स्थिति निर्मित हो गई। इसके बाद छात्र एवं उसके साथ आए अभा विद्यार्थी परिषद के लोगों ने आकर विद्यालय के बाहर मुख्य सडक पर जाम लगा दिया। उनकी मांग थी की शिक्षक को निष्कासित किया जाए। इस बीच शिक्षक ने छात्र एवं उसके अभिभावकों से लिखित रूप से माफी मांग लेने के उपरांत भी आंदोलन करने वाले निष्कासन पर अडे रहे। चक्काजाम की खबर पर विद्यालय पहुंचे नीलगंगा थाना प्रभारी तरूण कुरील ने छात्रों और चक्काजाम कर रहे संगठन के कार्यकर्ताओं को समझाया । प्राचार्य शर्मा के अनुसार करीब 3 घंटे उपरांत शिक्षक के विरूद्ध कार्रवाई का पत्र जिला शिक्षा अधिकारी के नाम दिए जाने पर चक्काजाम समाप्त किया गया।

छात्र बोला, बाहर ले जाकर पीटा, शर्ट फाड़ी

12वीं आर्ट्स (हिंदी) के छात्र शिवेश चौधरी ने बताया, चौथे पीरियड में श्रुति जायसवाल मैडम ने अंग्रेजी बोलने के लिए कहा। जब हम नहीं बोल पाए तो उन्होंने अंग्रेजी में अपशब्द कहे। इसके बाद रवि सर आए और मुझे बाहर ले जाकर पीटा और शर्ट फाड़ दी।

शिक्षिका बोली, डांटा तो वीडियो बनाने लगे

इंटर्नशीप शिक्षिका श्रुति जायसवाल ने का कहना था मैं कक्षा में बच्चों को पढ़ा रही थी। इस दौरान शिवेश सहित एक-दो छात्र टेबल हिलाकर शोर कर रहे थे। मना करने पर वे अशोभनीय टिप्पणियां करने लगे। मैंने डांटा तो मोबाइल निकालकर वीडियो बनाना शुरू कर दिया। रवि सर को बुलाने पर छात्र ने धक्का-मुक्की, सर ने थप्पड मारा तो छात्र ने मारपीट शुरू कर दी।

सम्राट विक्रम विश्वविद्यालय में 50 बिस्तरी आयुष अस्पताल

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

उज्जैन दक्षिण क्षेत्र के निवासियों और सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय के छात्रों को जल्द ही एक नई स्वास्थ्य सुविधा मिलेगी। विश्वविद्यालय परिसर में 50 बिस्तरी आयुष चिकित्सालय का निर्माण किया जाएगा।

यह अस्पताल आयुर्वेद, पंचकर्म वेलनेस सेंटर, ओपीडी और आईपीडी जैसी आधुनिक सुविधाएं प्रदान करेगा। यह प्रदेश का पहला आयुष अस्पताल होगा जो किसी विश्वविद्यालय परिसर के भीतर संचालित होगा। इस पहल से उज्जैन दक्षिण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती मिलेगी। विश्वविद्यालय की कार्य परिषद ने अस्पताल निर्माण के लिए आयुष विभाग को लगभग दो एकड़ भूमि उपलब्ध कराने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। दोनों संस्थाओं के बीच इस संबंध में समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर भी हो चुके हैं। कुलपति प्रो. अर्पण भारद्वाज ने बताया कि यह निर्णय मुख्यमंत्री के निर्देश और कार्य परिषद की सहमति के बाद लिया गया है। अस्पताल के निर्माण से विश्वविद्यालय परिसर में रहने वाले 800 से अधिक छात्र-छात्राओं, कर्मचारियों और आसपास के नागरिकों को 24 घंटे स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल सकेगा। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि यह प्रदेश का पहला आयुष चिकित्सालय होगा जो किसी विश्वविद्यालय परिसर के भीतर स्थापित और संचालित होगा। चिकित्सालय में आयुर्वेद, पंचकर्म वेलनेस सेंटर, ओपीडी और आईपीडी जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

ईथाईल वाली दवा डाक्टर के पर्चे के बगैर मिलना संभव नहीं

अब अवैध भट्टी की शराब बनाने वालों को टींचर मिलना मुश्किल होगा

बगैर पर्चे के ईथाईल अल्कोहल की दवा देने पर मुसीबतों का सामना करना होगा विक्रेता को

ब्रह्मास्त्र ▸▸ उज्जैन

इथाईल अल्कोहल की 12 प्रतिशत से अधिक मात्रा वाली दवाएं अब बगैर डाक्टर के पर्चे के विक्रय नहीं की जा सकेंगी। केंद्र सरकार ने ऐसे उत्पादों की बिक्री के लिए लाइसेंस और डॉक्टर के पर्चे को अनिवार्य कर दिया है। इथाईल अल्कोहल के एक रूप में टींचर भी है जिसका उपयोग अवैध हाथ भट्टी की शराब बनाने में किया जाता है। ऐसे में इस अवैध काम पर भी बडी मात्रा में रोक लगेगी।

जिला ड्रग निरीक्षक धर्मेन्द्र सिंह कुशवाह के अनुसार केंद्र सरकार ने शुक्रवार को अधिक मात्रा में एथिल अल्कोहल (इथेनॉल) युक्त औषधीय फॉर्मूलेशनों (दवाओं) के नियमन को सख्त कर दिया। इसे लेकर नोटिफिकेशन को सभी विक्रेताओं के संज्ञान में ला दिया गया है। इसके लिए सोमवार को विभागीय स्तर पर भी कार्रवाई करते हुए पत्र विक्रेताओं की एसोसिएशन एवं सोश्यल मिडिया पर प्रसारित कर दिया जाएगा।

ये किया सरकार ने

सरकार ने ऐसे उत्पादों की बिक्री के लिए लाइसेंस और डॉक्टर के पर्चे को अनिवार्य कर दिया है। इस कदम का उद्देश्य इन दवाओं के दुरुपयोग पर रोक लगाना और साथ ही वास्तविक चिकित्सीय जरूरतों के लिए उनकी उपलब्धता सुनिश्चित करना है। मंत्रालय ने बताया कि इलायची, अदरक और अन्य सुगंधित औषधीय फॉर्मूलेशन की टिंचर जैसी कई औषधीय तैयारियों को पहले अनुसूची-के तहत लाइसेंस संबंधी आवश्यकताओं से छूट प्राप्त थी। हालांकि, इनमें से कुछ उत्पादों में 80 से 90 प्रतिशत तक एथाइल अल्कोहल होता है, जिससे इनके नशे के उद्देश्य से दुरुपयोग की आशंका रहती है। केंद्र सरकार ने यह भी बताया कि कुछ राज्य सरकारों ने ऐसे उत्पादों के दुरुपयोग को लेकर चिंता जताते हुए इस संबंध में सुझाव और संदर्भ भेजे थे।

लाइसेंस प्राप्त करना होगा

इस समस्या के समाधान के लिए सरकार ने तय किया है कि 12 प्रतिशत से अधिक एथाइल अल्कोहल वाली और 30 मिलीलीटर से अधिक पैकिंग में उपलब्ध सभी औषधीय तैयारियां अब अनुसूची-के तहत मिलने वाली छूट की पात्र नहीं होंगी। इसके परिणामस्वरूप ऐसे उत्पादों के निमार्ता और विक्रेताओं को अब औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 के तहत आवश्यक लाइसेंस प्राप्त करना होगा।

- **विस्तृत रिकॉर्ड रखना होगा-** संशोधन के तहत इन औषधीय तैयारियों को ड्रग्स रूल्स, 1945 की अनुसूची-एच1 में भी शामिल किया गया है, जिससे ये अधिक कड़े नियामकीय नियंत्रण के दायरे में आ जाएंगी। अनुसूची-एच1 में शामिल दवाएं केवल पंजीकृत चिकित्सा प्रैक्टिशनर के पर्चे पर ही बेची जा सकेंगी और इनके विक्रय का विस्तृत रिकॉर्ड रखना भी अनिवार्य होगा।
- **निगरानी -नियंत्रण होगा मजबूत-** मंत्रालय के अनुसार, संशोधित व्यवस्था से अल्कोहल युक्त औषधीय उत्पादों की निगरानी और नियंत्रण मजबूत होगा तथा यह सुनिश्चित किया जाएगा कि इनकी आपूर्ति केवल विनियमित दवा वितरण प्रणाली के माध्यम से ही हो। इससे इन उत्पादों के दुरुपयोग और गलत इस्तेमाल की आशंका में उल्लेखनीय कमी आएगी जबकि वास्तविक चिकित्सीय जरूरत वाले मरीजों के लिए इनकी उपलब्धता बनी रहेगी। मंत्रालय ने कहा कि यह संशोधन देश की दवा नियामक व्यवस्था को और मजबूत बनाने, औषधीय उत्पादों के विवेकपूर्ण एवं जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने तथा जनस्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने के सरकार के व्यापक प्रयासों का हिस्सा है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संदीप मेहता द्वारा अवंतिका ऑफसेट 2, महाकाल मंदिर मार्ग, मालीपुरा, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-संदीप मेहता 9827771777 फोन : 0734-4012777 Email -dainikbrahmastra@gmail.com